दिव्य गुणों तथा योग के शिखर पर ले जाने वाली ये अव्यक्त वाणियाँ

अप्रैल 1985 से लेकर अप्रैल 1986 तक की अव्यक्त वाणियों का संग्रह अपनी ही अद्भुत विशेषताओं से युक्त है। यूँकि सन 1985 में युवा पदयात्रा का कार्यक्रम क्रियान्वित होना था और 1986-87 को स्वर्ण जयन्ति के रुप में जाने का प्रोग्राम बनाया गया था, इसलिए इन नये आयामों पर भी अव्यक्त बापदादा की प्रेरणादायक मार्ग प्रदर्शना प्राप्त हुई। इन दोनों अवसरों पर विशेष रुप से सामने रखकर बापदादा ने रुहरिहान का एक नया दौर चलाया। न केवल युवा वर्ग में एक नई रुह फूँक दी बल्कि जिन्हें इस विश्व विद्यालय में २५ वर्ष हो चुके थे, उमें भी एक नई उमंग और नई खुशी पैदा कर दी। गोल्डल जुबली को गोल्डन संकल्पों से मनाने के लिए जो सुझाव उन्होंने दिया वह तत्सम्बन्धित वाणियों में बार-बार पढ़ने योग्य हैं।

यह वर्ष हमें किस प्रकार तपस्या वर्ष के रुप में मनाना है – इसके बारे में बापदादा ने बहुत स्नेह और सोहार्द पूर्ण और सरल, स्पष्ट तथा सशक्त शब्दों में मार्गदर्शना दी है। हम मन्सा सेवा कैसे करें, एकाग्रता से क्या उपलब्धियाँ होती है, दृढ़ता और सन्तुष्टता को अपने जीवन में पूर्ण रुपेण कैसे लायें, सब कामनाओं से परे कैसे हों – इन विषयों पर इन अव्यक्त वाणियों में विशेष प्रकाश डाला गया।

अव्यक्त बापदादा ने हम वत्सों को अपने इस संगमयुगी जीवन में हर परिस्थिति में सदा खुश रहने के लिए विशेष बल दिया। इतना ही नहीं बल्कि उन्होंने खुशी की दवाई देने वाला डाक्टर बनने के लिए कहा है। उन्होंने इस बात की ओर भी फिर से ध्यान खिंचवाया है कि हरेक ब्रह्मा-वत्स एक विशेष आत्मा है और कि हर कोई अपनी विशेषता को पहचानों, वरदानी और महादानी बनो।

इन अव्यक्त वाणियों में सार रुप से ईश्वरीय विद्या का सागर ही समाया हुआ है। ये ज्ञान का प्रेक्टिकल रुप हैं और दिव्य गुणों तथा योग के शिखर पर ले जाने वाली हैं। इन वाणियों के अतिरिक्त अव्यक्त बापदादा ने अलग-अलग समुदायों से अथवा ब्रह्मा-वत्सों से जो अलग-अलग ज्ञान-वार्ता की उन सबको यदि हम लिपिबद्ध करने लगें, तब तो सचमुच ही पृथ्वी और आकाश को काग़ज और सागर के जल को स्याही बनाना पड़ेगा। यदि हम इतना ही धारण कर लें जों इन अव्यक्त वाणियों में हैं, तब भी हम लक्ष्य की सीढ़ी की उच्चतम पौड़ी तक पहुँच सकते हैं। इसके लिए इन्हें बारम्बार पढ़ने और इन पर मनन करने की जरुरत है।

—- जगदीश

अमृत सूची

१. मुख्य भाई-बहनों की मीटिंग में अव्यक्त बापदादा के मधुर महावाक्य (11-4-85)
२. दादी जी को विदेश यात्रा पर जाने की छुट्टी देते समय अव्यक्त बापदादा के महावाक्य (2-9-85)
३. दीपमाला – समीपता, सम्पन्नता और सम्पूर्णता का यादगार (11-11-85)
४. संकल्प, संस्कार, सम्बन्ध, बोल और कर्म में नवीनता लाओ (13-11-85)
५. भगवान के भाग्यवान बच्चों के लक्षण (18-11-85)
६. ब्राह्मणों का संगमयुगी न्यारा, प्यारा श्रेष्ठ संसार (20-11-85)
७. निश्चय बुद्धि विजयी रत्न की निशानियाँ (25-11-85)
८. पुराना संसार और पुराना संस्कार भुलाने का उपाय (27-11-85)
९. बन्धनों से मुक्ति की युक्ति – रुहानी शक्ति (2-12-85)
१०. संकल्प की भाषा – सर्वश्रेष्ठ भाषा (4-12-85)
११. बालक सो मालिक (9-12-85)
१२. सच्चे सेवाधारी की निशानी (11-12-85)
१३. मधुबन निवासियों के साथ अव्यक्त बापदादा की मुलाकत (14-12-85)
१४. राईट हैन्ड कैसे बनें? (16-12-85)
१५. फालो फादर (19-12-85)
१६. कामजीत – सर्व हद की कामनाओं से परे (23-12-85)
१७. बड़े दिन पर अव्यक्त बापदादा के महावाक्य (25-12-85)
१८. विशाल बुद्धि की निशानी (30-12-85)
१९. नव वर्ष पर नवीनता की मुबारिक (1-1-86)

२०. संगमयुग – जमा करने का युग (6-1-86)
२१. धरती के होली सितारे (8-1-86)
२२. ब्राह्मण जीवन – सदा बेहद की खुशियों का जीवन (13-1-86)
२३. सस्ता सौदा और बचत का बजट (15-1-86)
२४. मन्सा शक्ति तथा निर्भयता की शक्ति (18-1-86)
२५. पुरुषार्थ और परिवर्तन के गोल्डन चांस का वर्ष (20-1-86)
२६. बापदादा की आशा – सम्पूर्ण और सम्पन्न बनो (22-1-86)
२७. गोल्डन जुबजी का गोल्डन संकल्प (16-2-86)
२८. निरन्तर सेवाधारी तथा निरन्तर योगी बनो (18-2-86)
२९. उड़ती कला से सर्व का भला (20-2-86)
३०. रुहानी सेवा – निस्वार्थ सेवा (22-2-86)
३१. मधुबन में ५० विदेशी भाई-बहनों के समर्पण समारोह पर अव्यक्त बापदादा के महावाक्य (25-2-86)
३२. रुहानी सेना – कल्प-कल्प की विजयी (27-2-86)
३३. होलीहंस बुद्धि, वृत्ति, दृष्टि और मुख (1-3-86)
३४. सर्वश्रेष्ठ नई रचना का फाउन्डेशन – स्नेह (4-3-86)
३५. शिवरात्रि पर अव्यक्त बापदादा के मधुर महावाक्य (7-3-86)
३६. बेफिकर बादशाह बनने की युक्ति (10-3-86)
३७. करेबियन ग्रुप के प्रति बापदादा के महावाक्य (13-3-86)
३८. रुहानी ड्रिल (16-3-86)
३९. अमृत वेला – श्रेष्ठ प्राप्तियों की वेला (19-3-86)
४०. सुख, शान्ति और खुशी का आधार – पवित्रता (22-3-86)
४१. होली का रहस्य (25-3-86)
४२. सदा के स्नेही बनो (27-3-86)
४३. डबल विदेशी बच्चों से बापदादा की रुह-रुहान (29-3-86)
४४. सर्वशक्ति-सम्पन्न् बनने तथा वरदान पाने का वर्ष (31-3-86)
४५. तपस्वी-मूर्त, त्याग-मूर्त, विधाता ही विश्व-राज्य अधिकारी (7-4-86)
४६. सच्चे सेवाधारी की निशानी (9-4-86)
४७. श्रेष्ठ तकदीर की तस्वीर बनाने की युक्ति (11-4-86)

11-4-85

मुख्य भाई बहनों की मीटिंग में अव्यक्त बापदादा के मधुर महावाक्य

आज विशेष विश्व परिवर्तन, आधार स्वरुप, विश्व के बेहद सेवा के आधार स्वरुप, श्रेष्ठ स्मृति, बेहद की वृत्ति, मधुर अमूल्य बोल बोलने के आधार द्वारा औरों को भी ऐसे उमंग उत्साह दिलाने के आधार स्वरुप निमित्त और निमार्ण स्वरुप ऐसी विशेष आत्माओं से मिलने के लिए आये हैं। हर एक अपने को ऐसा आधार स्वुप अनुभव करते हो? आधार रुप आत्माओं के इस संगठन पर इनती बेहद की जिम्मेवारी है। आधार रुप अर्थात् सदा स्वयं को हर समय, हर संकल्प, कर्म में जिम्मेवार समझ चलने वाले। इस संगठन में आना अर्थात् बेहद के जिम्मेवारी के ताजधारी बनना। यह संगठन जिसको मीटिंग कहते हो, मीटिंग में आना अर्थात् सदा बाप से, सेवा से, परिवार से, स्नेह के श्रेष्ठ संकल्प के धागे में बंधना और बांधना, इसके आधार रुप हो। इस निमित्त संगठन में आना अर्थात् स्वयं को को सर्व के प्रति एग्जैम्पुल बनाना। यह मीटिंग नहीं लेकिन सदा मार्यादा पुरुषोत्म बनने के शुभ संकल्प के बंधन में बंधना है। आधार स्वरुप संगठन। चारों ओर के विशेष चुने हुए रतन इकट्ठे हुए हो। चुने हुए अर्थात् बाप समान बने हुए। सेवा का आधार स्वरुप अर्थात् स्व उद्धार और सर्व के उद्धार स्वरुप। जितना स्व के उद्धार स्वरुप होंगे उतना ही सर्व के उद्धार स्वरुप निमित्त बनेंगे।

बापदादा इस संगठन के आधार रुप और उद्धार रुप बच्चों को देख रहे थे और विशेष विशेषता देख रहे थे आधार रुप भी बन गये, उद्धार रुप भी बने। इन दोनों बातों में सफलता पाने के लिए तीसरी क्या बात चाहिए? आधार रुप हैं तभी तो निमन्त्रण पर आये हैं ना। और उद्धार रुप हैं तब तो प्लैन्स बनाये हैं। उद्धार करना अर्थात् सेवा करना। तीसरी बात क्या देखी? जितने विशेष संगठन के हैं उतने उदारचित। उदारदिल वा उदारचित के बोल, उदारचित की भावना कहाँ तक है? क्योंकि उदारचित अर्थात् सदा हर कार्य में फ्राखदिल, बड़ी दिल वाले। किस बात में फ्राखदिल वा बड़ी दिल हो? सर्व प्रति शुभ भावना द्वारा आगे बढ़ाने में फ्राखदिल। तेरा सो मेरा, मेरा सो तेरा। क्योंकि एक ही बाप का है। इस बेहद की वृत्ति में फ्राखदिल। बड़ी दिल हो। उदार दिल हो अर्थात् दातापन की भावना की दिल। अपने प्राप्त किये हुए गुण, शक्तियाँ विशेषतायें सबमें महादानी बनने में फ्राखदिल। वाणी द्वारा ज्ञान धन, दान करना यह कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन गुण दान वा गुण देने के सहयोगी बनना। यह दान शब्द ब्राह्मणों के लिए योग्य नहीं है। अपने गुण से दूसरे को गुणवान, विशेषता भरने में सहयोगी बनना इसको कहा जाता है महादानी, फ्राखदिल। ऐसा उदारचित बनना, उदार दिल बनना यह है ब्रह्मा बाप को फालो फादर करना। ऐसे उदारचित की निशानी क्या होगी?

तीन निशानियाँ विशेष होंगी। ऐसी आत्मा ईर्ष्या, घृणा और क्रिटिसाइज करना (जिसको टोन्ट मारना कहते हो) इन तीनों बातों से सदा मुक्त होगी। इसको कहा जाता उदारचित। ईर्ष्या स्वयं को भी परेशान करती, दूसरे को भी परेशान करती है। जैसे क्रोध को अग्नि कहते हैं ऐसे ईर्ष्या भी अग्नि जैसा ही काम करती है। क्रोध महा अग्नि है, ईष्या छोटी अग्नि है। घृणा कभी भी शुभ चिन्तक, शुभ चिन्तन स्थिति का अनुभव नहीं करायेगी। घृणा अर्थात् खुद भी गिरना और दूसरे को भी गिराना। ऐसे क्रिटिसाइज करना चाहे हँसी में करो चाहे सीरियस होकर करो लेकिन यह ऐसा दु:ख देता है जैसे कोई चल रहा हो, उसको धक्का देकर गिराना। ठोकर देना। जैसे कोई गिरा देते तो छोटी चोट वा बड़ी चोट लगने से वह हिम्मतहीन हो जाता है। उसी चोट को ही सोचते रहते हैं, जब तक वो चोट होगी तब तक चोट देने वाले को किसी भी रुप में याद जरुर करता रहेगा यह साधारण बात नहीं है। किसके लिए कह देना बहुत सहज है। लेकिन हँसी की चोट भी दु:ख रुप बन जाती है। यह दु:ख देने की लिस्ट में आता है। तो समझा! जितने आधार स्वरुप हो उतने उद्धार स्वरुप, उदारदिल, उदारचित्त बनने के निमित्त स्वरुप। निशानियाँ समझ ली ना। उदारचित्त फ्राखदिल होगा।

संगठन तो बहुत अच्छा है। सभी नामीग्रामी आये हुए हैं। प्लैन्स भी अच्छे-अच्छे बनाये हैं। प्लैन को प्रैक्टिकल में लाने के निमित्त हो। जितने अच्छे प्लैन बनाये हैं उतने स्वयं भी अच्छे हो। बाप को अच्छे लगते हो। सेवा की लगन बहुत अच्छी है। सेवा का सदा-काल की सफलता का अधार उदारता है। सभी का लक्ष्य, शुभ संकल्प बहुत अच्छा है और एक ही है। सिर्फ एक शब्द एड करना है। एक बाप को प्रत्यक्ष करना है – एक बनकर एक को प्रत्यक्ष करना है। सिर्फ यह एडीशन करनी है। एक बाप का परिचय देने के लिए अज्ञानी लोग भी अंगुला का इशारा करेंगे। दो अंगुली नहीं दिखायेंगे। सहयोगी बनने की निशानी भी एक अंखुली दिखा-येंगे। आप विशेष आत्माओं की यही विशेषाता की निशानी चली आ रही है।

तो इस गोल्डन जुबली को मनाने के लिए वा प्लैन बनाने के लिए सदा दो बातें याद रहें – ''एकता और एकाग्रता''। यह दोनों श्रेष्ठ भुजायें हैं, कार्य करने की सफलता की। एकाग्रता अर्थात् सदा निर्व्यर्थ संकल्प। निर्विकल्प। जहाँ एकता और एकाग्रता है वहाँ सफलता गले का हार है। गोल्डन जुबली का कार्य इन विशेष दो भुजाओं से करना। दो भुजायें तो सभी को हैं। दो यह लगाना तो चतुर्भुज हो जायेंगे। सत्यनारायण और महालक्ष्मी को चार भुजायें दिखाई हैं। तो अभी सत्यनारायण, महालक्ष्मियाँ हो। चतुर्भुजधारी बन हर कार्य करना अर्थात् साक्षात्कार स्वरुप बनना। सिर्फ २ भुजाओं से काम नहीं करना। ४ भुजाओं से करना। अभी गोल्डन जुबली का श्रीगणेश किया है ना। गणेश को भी ४ भुजा दिखाते हैं। बापदादा रोज़ मीटिंग में आते हैं। एक चक्र में ही सारा समाचार मालूम हो जाता है। बापदादा सभी का चित्र खींच जाते हैं। कैसे-कैसे बैठे हैं। शरीर रुप में नहीं। मन की स्थिति के आसन का फोटो निकालते हैं। मुख से कोई क्या भी बोल रहा हो लेकिन मन से क्या बोल रहे हैं, वह मन के बोल टेप करते हैं। बापदादा के पास भी सबके टेप किये हुए कैसेटस हैं। चित्र भी हैं, दोनों हैं। वीडियो, टी.वी.आदि जो चाहो वह है। आप लोगों के पास अपना कैसेट तो है ना। लेकिन कोई-कोई को अपने मन की आवाज, संकल्प का पता नहीं चलता है। अच्छा!

यूथ प्लैन सभी को अच्छा लगता है। यह भी उमंग-उत्साह की बात है। हठ की बात नहीं है। जो दिल का उमंग होता है। वह स्वत: ही औरों में भी उमंग का वातावरण बनाते हैं। तो यह पद यात्रा नहीं लेकिन उमंग की यात्रा है। यह तो निमित्त मात्र है। जो भी निमित्त मात्र कार्य करते हो उसमें उमंग उत्साह की विशेषता हो। सभी को प्लैन पसन्द है। आगे भी जैसे चार भुजाधारी बन करके प्लैन प्रैक्टिकल में लाते रहेंगे तो और भी एडीशन होती रहेगी। बापदादा को सबसे अच्छे ते अच्छी बात यह लगी कि सभी को गोल्डन जुबली धूमधाम से मनाने का उमंग उत्साह वाला संकल्प एक है। यह फाउन्डेशन सभी के उमंग उत्साह के संकल्प का एक ही है। इसी एक शब्द को सदा अन्डरलाइन लगाते आगे बढ़ना। एक हैं, एक का कार्य है। चाहे किस भी कोने में हो रहा है, चाहे देश में हो वा विदेश में हो। चाहे किसी भी जोन में हो इस्ट में हो वेस्ट में हो लेकिन एक हैं, एक का कार्य है। ऐसे ही सभी का संकल्प है ना। पहले यह प्रतिज्ञा की है ना। मुख की प्रतिज्ञा नहीं, मन में यह प्रतिज्ञा अर्थात् अटल संकल्प। कुछ भी हो जाये लेकिन टल नहीं

सकते। अटल। ऐसे प्रतिज्ञा सभी ने की? जैसे कोई भी शुभ् कार्य करते हैं तो प्रतिज्ञा करने के लिए सभी पहने मन में संकल्प करने की निशानी कंगन बांधते हैं। कार्यकर्ताओं को चाहे धागे का, चाहे किसका भी कंगन बांधते हैं। तो यह श्रेष्ठ संकल्प का कंगन है ना। और जैसे आज सभी ने भण्डारी में बहुत उमंग-उत्साह से श्री गणेश किया। ऐसे ही अभी यह भी भण्डारी रखो। जिस में सभी यह अटल प्रतिज्ञा समझ यह भी चिटकी डालें। दोनों भण्डारी साथ-साथ होंगी तब सफलता होगी। और मन से हो, दिखावे से नहीं। यही फाउन्डेशन है। गोल्डन बन गोल्डन जुबली मनाने का यह आधार है। इसमें सिर्फ एक सलोगान याद रखना '' न समस्या बनेंगे न समस्या को देख डगमग होंगे।'' स्वयं भी समाधान स्वरुप होंगे और दूसरों को भी समाधान देने वाले। यह स्मृति स्वत: ही गोल्डन जुबली को सफलता स्वरुप बनाती रहेगी। जब फाइनल गोल्डन जुबली होगी तो सभी को आपके गोल्डन स्वरुप अनुभव होंगे। आप में गोल्डन वर्ल्ड देखेंगे। सिर्फ कहेंगे नहीं गोल्डन दुनिया आ रही है लेकिन प्रैक्टिल दिखायेंगे। जैसे जादूगर लोग दिखाते जाते, बोलते जाते यह देखो... तो आपका यह गोल्डन चेहरा, चमकता हुआ मस्तक, चमकती हुई आंखे, चमकते हुए ओंठ यह सब गोल्डन एज का साक्षात्कार करावें। जैसे चित्र बनाते हैं ना – एक ही चित्र में अभी-अभी ब्रह्मा देखे अभी-अभी कृष्ण देखो, विष्णु देखे। ऐसे आपका साक्ष्ज्ञात्कार हो। अभी-अभी फरिश्ता, अभी-अभी विश्व महाराजन विश्व महारानी रुप। अभी-अभी साधारण सफेद वस्त्रधारी। यह भिन्न-भिन्न स्व्रुप आपके इस गोल्डन मूर्त से दिखाई दें। समझा!

जब इतने चुने हुए रुहानी गुलाब का गुदलस्ता इकट्ठा हुआ है। एक रुहानी गुलाब की खुशबू कितनी होती है। और यह इतना बड़ा गुलदस्ता कितना कमाल करेंगा! और एक-एक सितारे में संसार भी है। अकेले नहीं हो। उन सितारों में दुनिया नहीं है। आप सितारों में तो दुनिया है ना! कमाल तो होनी ही है। हुई पड़ी है। सिर्फ जो ओटे सो अर्जुन बने। बाकी अर्जुन अर्थात् नम्बरवन। अभी इस पर इनाम देना। पूरी गोल्डन जुबली में न समस्या बना न समस्या को देखा। निर्विघ्न निर्विकल्प, निर्विकारी तीनों ही विशेषता हों। एसी गोल्डन स्थिति में रहने वालों को वह इनाम देना। बापदादा को भी खुशी है। विशाल बुद्धि वाले बच्चों को देख खुशी तो होगी ना। जैसे विशाल बुद्धि वैसे विशाल दिल। सभी विशाल बुद्धि वाले हो तब तो प्लेन बनाने आये हो। अच्छा–

सदा स्वयं को आधार स्वरुप, उद्धार करने वाले स्वरुप, सदा उदारते वाले उदार दिल, उदारचित, सदा एक हैं एक का ही कार्य है, ऐसे एकरस स्थिति में स्थित रहने वाले सदा एकता और एकाग्रता में स्थिति रहने वाले ऐसे विशाल बुद्धि, विशाल चित बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।''

(मुख्य भाई-बहनों से):- सभी ने मीटिंग की। श्रेष्ठ संकल्पों की सिद्धि होती ही है। सदा उमंग उत्साह से आगे बढ़ना यही विशेषता है। मंसा सेवा की विशेष ट्रायल करो। मंसा सेवा जैसे एक चुम्बक है। जैसे चुम्बक कितनी भी दूर की सुई को खींच सकता है ऐसे मंसा सेवा द्वारा घर बैठे समीप पहुँच जायेगा। अभी आप लोग बाहर ज्यादा बिजी रहते हो, मंसा सेवा को यूज करो। स्थापना में जो भी बड़े कार्य हुए हैं तो सफलता मंसा सेवा की हुई हॅं। जेसे वह लोग रामलीला या कुछ भी कार्य करते हैं तो कार्य के पहले अपनी स्थिति को उसी कार्य के अनुसार वृत में रखते हैं। तो आप सभी भी मंसा सेवा का वृत लो। वृत न धारण करने से हलचल में ज्यादा रहते हो। इसलिए रिजल्ट में कभी कैसा कभी कैसा। मंसा सेवा का अभ्यास ज्यादा चाहिए। मंसा सेवा करने के लिए लाइट हाउस और माइट हाउस स्थिति चाहिए। माइट और माइट दोनों इकट्ठा हो। माइक के आगे माइट होकर बोलना है। माइक भी हो माइट भी हो। मुख भी माइक है।

तो माइट होकर माइक से बोले। जैसे पावरफुल स्टेज में ऊपर से उतरा हूँ, अवतार होकर सबके प्रति वह सन्देश दे रहा हूँ। अवतार बोल रहा हूँ। अवतरित हुआ हूँ। अवतार की स्टेज पावरफुल होगी ना। ऊपर से जो उतरता है, उसकी गोल्डन एज स्थिति होती है ना! तो जिस समय आप अपने को अवतार समझेंगे तो वही पावरफुल स्टेज है। अच्छा–

यूथ रैली के बारे में तथा यूथ विंग के बारे में:-

यूथ विंग भले बनाओ। जो भी करो – सन्तुष्टता हो सफलता हो। बाकी तो सेवा के लिए ही जीवन है। अपने उमंग से अगर कोई कार्य करते हैं तो उसमें कोई हर्जा नहीं। प्रोग्राम है, करना है तो वह दूसरा रुप हो जाता है। लेकिन अपने उमंग उत्साह से करने चाहाते हैं तो कोई हर्जा नहीं। जहाँ भी जायेंगे वहाँ जो भी मिलेंगे जो भी देखेंगे तो सेवा है ही। सिफ बोलना ही सर्विस नहीं होती लेकिन अपना चेहरा सदा हर्षित हो। रुहानी चेहरा भी सेवा करता है। लक्ष्य रखें उमें उत्साह से खुशी-खुशी से रुहानी खुशी की झलक दिखाते हुए आगे बढ़ें। सिर्फ जबरदस्ती कोई को नहीं करना है। प्रोग्राम बना है तो करना ही है, ऐसी कोई बात नहीं है, अपना उमंग उत्साह है तो करे, अच्छा है।

अगर कोई में उमंग नहीं है तो बंधे हुए नहीं हैं। हर्जा नहीं है। वैसे जो लक्ष्य था इस गोल्डन जुबली तक सब एरिया को कवर करने का तो जैसे वह पैदल चलने वाले अपने ग्रुप में आयेंगे वैसे बस द्वारा आने वाले भी हों। हर जोन वा हर एरिया में बस द्वारा सर्विस करते हुए दिल्ली पहुँच सकते हैं। दो प्रकार के ग्रुप बना दो। एक बस द्वारा आते रहें और सेवा करते आवें और एक पैदल द्वारा। डबल हो जायेगा। कर सकते हैं यूथ हैं ना। उनको कहाँ न कहाँ शक्ति तो लगानी ही है। सेवा में शक्ति लगेगी तो अच्छा है। इसमें

दोनों ही भाव सिद्ध हो जाएं – सेवा भी सिद्ध हो और नाम भी रखा है पदयात्रा तो वह भी सिद्ध हो जाए। हर स्टेट वाले अगर अनका (पदयात्रियों का) इन्टरव्यू लेने का पहले से ही प्रबन्ध रखेंगे तो आटोमेटिकली आवाज फैलेजगा। लेकिन सिर्फ यह जरुर होना चाहिए कि रुहानी यात्रा दिखाई दे, पदयात्रा सिर्फ नहीं दिखाई दे। रुहानियत और खुशी की झीलक हो। तो नवीतना दिखाई देगी। साधारण जैसे औरों की यात्रा निकलती है, वैसे नहीं लगे लेकिन ऐसे लगे यह डबल यात्रि हैं, एक यात्रा नहीं करते हैं। याद की यात्रा वाले भी हैं, पद यात्रा वाले भी हैं। डबल यात्रा का प्रभाव चेहरे से दिखाई दे तो अच्छा है।

अलग-अलग ग्रुप से:- १. सेवा करो और सन्तुष्टता लो। सिर्फ सेवा नहीं रकना लेकिन ऐसी सेवा करो जिसमें सन्तुष्टता हो। सभी की दुआयें मिले। दुआओं वाली सेवा सहज सफलता दिलाती है। सेवा तो प्लैन प्रमाण करनी ही है और खूब करो। खुशी उमंग से करो लेकिन यह ध्यान जरुर रखो – जो सेवा की उसमें दुआयें प्राप्त हुई? या सिर्फ मेहनत की? जहाँ दुआयें होगी वहॉ मेहनत नहीं होगी। तो अभी यही लक्ष्य रखो कि जिससे भी सम्पर्क में आयें उसकी दुआएं लेते जाएं। जब सबकी दुआयें लेंगे तब आधाकल्प आपके चित्र दुआयें देते रहेंगे। आपके चित्र से दुआये लेने आतो हैं ना। देवी या देवता के पास दुआयें लेने जाते हैं ना। तो अभी सर्व की दुआयें जमा करते हो तब चित्रों द्वारा भी देते रहते हो। फंक्शन करो, रैली करो.. बी.आई.पीज, आई पीज सर्विस करो, सब कुछ करो लेकिन दुआओं वाली सेवा करो। (दुआयें लेने का साधन क्या है?) हाँ जी का पाठ पक्का हो। कभी भी किसी को ना ना करके हिम्मतहीन नहीं बनाओ। माने अगर कोई रांग भी हो तो उसको सीधा रांग नहीं कहो। पहले उसे दिलास दो, हिम्मत दिलाओ। उसको हाँ करके पीछे समझाओ तो वह समझ जायेगा। पहले से ही ना ना कहेंगे तो उसकी जो थोड़ी भी हिम्मत होगी वह खत्म हो जायेगी। रांग तो हो भी सकता है लेकिन रांग को रांग कहेंगे तो वह अपने को रांग कभी नहीं समझेगा। इसलिए पहले उसे हाँ कहो, हिम्मत बढ़ाओ फिर वह स्वयं जजमेन्ट कर लेगा। रिगार्ड दो। यह विधि सिर्फ अपना लो। रांग भी हो तो पहले अच्छा कहो, पहले उसको हिम्मत आये। कोई गिरा हुआ हो तो क्या उसको और धक्का देंगे या उठायेंगे... उसे सहारा देकर पहले खड़ा करो। इसको कहते हैं उदारता। सहयोगी बनने वालों को सहयोगी बनाते चलो। तुम भी आगे मैं भी आगे। साथ-साथ चलते चलो। हाथ मिलाकर चलो। तो सफलता होगी। और सन्तुष्टता की दुआयें मिलेगी। ऐसी दुआयें लेने में महान बनो तो सेवा में स्वत: महान हो जायेंगे।

सेवाधारियों से:- सेवा करते हुए सदा अपने को कर्मयोगी स्थिति में स्थित रहने का अनुभव करते हो कि कर्म करते हुए याद कम हो जाती है और कर्म में बुद्धि ज्यादा रहती है! क्योंकि याद में रहकर कर्म करने से कर्म में कभी थकवाट नहीं होती। याद में रहकर कर्म करने वाले कर्म करते सदा खुशी का अनुभव करेंगे। कर्मयोगी बन कर्म अर्थात् सेवा करते हो ना! कर्मयोगी के अभ्यासी सदा ही हर कदम में वर्तमान और भविष्य श्रेष्ठ बनाते हैं। भविष्य खाता सदा भरपूर और वर्तमान भी सदा श्रेष्ठ। ऐसे कर्मयोगी बन सेवा का पार्ट बजाते हो। भूत तो नहीं जाता। मधुबन में सेवाधारी हैं तो मधुबन स्वत: ही बात की याद दिलाता है। सर्व शक्तियों का खजाना जमा किया है ना! इतना जमा किया है जो सदा भरपूर रहेंगे। संगमयुग पर बैटरी सदा चार्ज है। द्वापर से बैटरी ढीली होती। संगम पर सदा भरपूर, सदा चार्ज है। तो मधुबन में बैटरी भरने नहीं आते हो, स्वेज मनाने आते हो। बाप और बच्चों का स्नेह है इस-लिए मिलना सुनना, यही संगमयुग के स्वेज हैं। अच्छा

2-9-85

दादी जी को विदेश यात्रा पर जाने की छुट्टी देते समय अव्यक्त बापदादा के महावाक्य

आज मुरबी बच्चों के स्नेह का रिटर्न देने आये हैं। मधुबन वालों को अथक सेवा का विशेष फल देने के लिए सिर्फ मिलन मनाने आये हैं। ये है स्नेह का प्रत्यक्ष प्रमाण स्वरुप। ब्राह्मण परिवार का विशेष फाउण्डेशन है ही यह विशेष स्नेह। वर्तमान समय स्नेह हर सेवा के कार्य में सफलता का सहज साधन है। योगी जीवन का फाउण्डेशन तो निश्चय है लेकिन परिवार का फाउण्डेशन स्नेह है। जो स्नेह ही किसी के भी दिल को समीप ले आता है। वर्तमान समय याद और सेवा के बैलेन्स के साथ स्नेह और सेवा का बैलेन्स सफलता का साधन है। चाहे देश की सेवा हो, चाहे विदेश की सेवा हो, दोनों की सफलता का साधन रुहानी स्नेह है। ज्ञान और योग शब्द तो बहुतों ने सुना है। लेकिन दृष्टि से व श्रेष्ठ संकल्प से आत्माओं को स्नेह की अनुभूति होना यह विशेषता और नवीनता है। और आज के विश्व को स्नेह की आवश्यकता है। कितनी भी अभिमानी आत्मा को स्नेह समीप ला सकता है। स्नेह के भिखारी शान्ति के भिखारी हैं लेकिन शान्ति का अनुभव भी स्नेह की दृष्टि द्वारा ही करा सकते हैं। तो स्नेह, शान्ति का स्वत: ही अनुभव करात है। क्योंकि स्नेह में खो जाते हैं। इसलिए थोड़े समय के लिए अशरीरी स्वत: ही बन जाते हैं। तो अशरीरी बनने के कारण शान्ति का अनुभव सहज होता है। बाप भी स्नेह का ही रेस्पांड देता है। चाहे रथ चले न चले फिर भी बाप को स्नेह का सबूत देना ही है। बच्चों में भी यही स्नेह का प्रत्यक्षफल बापदादा देखना चाहते हैं। कोई (गुल्जार बहन, जगदीश भाई, निर्वैर भाई) विदेश सेवा कर लौटे हैं और कोई (दादी जी और मोहिनी बहन) जा रहे हैं। ये भी उन आत्मा के स्नेह का फल उन्हों को मिल रहा है। ड्रामा अनुसार सोचते और हैं लेकिन होता और है। फिर भी फल मिल ही जाता है। इसलिए प्रोग्राम बन ही जाता है। सभी अपना-अपना

अच्छा ही पार्ट बजा कर आये हैं। बना बनाया ड्रामा नूँधा हुआ है तो सहज ही रिटर्न मिल जाता है। विदेश भी अच्छी लगन से सेवा में आगे बढ़ रहा है। हिम्मत और उमंग उन्हीं में चारों ओर अच्छा है। सभी के दिल के शुक्रिया के संकल्प बापदादा के पास पहुँचते रहते हैं। क्योंकि वह भी समझते हैं। भारत में भी कितनी आवश्यकता है फिर भी भारत का स्नेह ही हमें सहयोग दे रहा है। इसी भारत में सेवा करने वाले सहयोगी परिवार के दिल से शुक्रिया करते हैं। जितना ही देश दूर उतना ही दिल से पालना के पात्र बनने में समीप हैं इसलिए बापदादा चारों ओर के बच्चों को शुक्रिया के रिटर्न में यादप्यार और शुक्रिया दे रहे हैं। बाप भी तो गीत गाते हैं ना।

भारत में भी अच्छे उमंग उत्साह यात्रा का बहुत ही अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। चारों ओर सेवा की धूमधाम की रौनक बहुत अच्छी है। उमंग उत्साह थकावट को भुलाय सफलता प्राप्त करा रहा है। चारों ओर की सेवा की सफलता अच्छी है। बापदादा भी सभी बच्चों के सेवा के उमंग उत्साह का स्वरुप देख हर्षित होते हैं।

(नेरोबी में जगदीश भाई पोप से मिलकर आये हैं) पोप को भी दृष्टि दी ना। यह भी आप के लिए विशेष वी.आई.पी. की सेवा में सफलता सहज होने का साधन है। जैसे भारत में विशेष राष्ट्रपति आये। तो अभी कह सकते हैं कि भारत में भी आयें हैं। ऐसे ही विशेष विदेश में विदेश के मुख्य धर्म के प्रभाव के नाते से समीप सम्पर्क में आये तो किसी को भी सहज हिम्मत आ सकती है कि हम भी सम्पर्क में आयें। तो देश का भी अच्छा सेवा का साधन बना और विदेश सेवाका भी विशेष साधन बना। तो समय प्रमाण जो भी सेवा में समीप आने में कोई भी रुकावट आती है, वह भी सहज समाप्त हो जायेगी। प्राइम मिनिस्टर का मिलना तो हुआ ना। तो दुनिया वलों के लिए, ये इग्जाम्पिल भी मदद देते हैं। सभी के क्वेश्चन कि और कोई आये हैं? ये क्वेश्चन खत्म हो जाते हैं। तो ये भी ड्रामा अनुसार इसी वर्ष सेवा में सहज प्रत्यक्षता के साधन बने। अभी समीप आ रहे हैं। इन्हों का तो सिर्फ नाम ही काम करेगा। तो नाम से जो काम होना है उसकी धरती तैयार हो गई। आवाज ये नहीं फैलयेंगे। आवाज फैलाने वाले माइक् और हैं। ये माइक को लाइट देने वाले हैं। लेकिन फर भी धरती की तैयारी अच्छी हो गई है। जो विदेश में पहले वी.आई.पी. के लिए मुश्किल अनुभव करते थे, अभी वह चारों ओर सहज अनुभव करते हैं ये रिजल्ट अभी अच्छी है। इन्हों के नाम से काम करने वाले तैयार हो जायेंगे। अभी देखो वह कभी निमित्त् बनता है। धरनी तैयार करने के लिए चारों ओर सब गये। भिन्न-भिन्न तरफ धरनी को पांव देकर तैयार तो किया है। अभी फल प्रत्यक्ष रुप में किस द्वारा होता है, उसकी तैयारी अब हो रही है। सभी को रिजल्ट अच्छी है।

पदयात्री भी एक बल एक भरोसा रखकर के आगे बढ़ रहे हैं। पहले मुश्किल लगता है। लेकिन जब प्रैक्टिकल में आते हैं तो सहज हो जाता है। तो सभी देश-विदेश और जो भी सेवा के निमित्त बन सेवा द्वारा अनेकों को बापदादा के स्नेही सहयोगी बनाकर आये हैं, उनर सभी को विशेष यादप्यार दे रहे हैं। हर बच्चे का वरदान अपना-अपना है। विशेष भारत के सब पदयात्रा पर चलने वाले बच्चों को और विदेश सेवा अर्थ चारों ओर निमित्त बने हुए बच्चों को और मधुबन निवासी श्रेष्ठ सेवा के निमित्त बने हुए बच्चों को, साथ-साथ जो सभी भारतवासी बच्चे यात्रा वालों को उमंग-उत्साह दिलाने के निमित्त बने हैं, उन सभी चारों ओर के बच्चों को विशेष यादप्यार और सेवा की सफलता की मुबारक दे रहे हैं। हरेक स्थान पर मेहनत तो की है, लेकिन ये विशेष कार्य अर्थ निमित्त बने। इसलिए विशेष जमा हो गया। हरेक देश मोरीशस, नैरोबी, अमरीका ये सब इग्जाम्पिल तैयार हो रहे हैं। और ये इग्जाम्पिल आगे प्रत्यक्षता में सहयोगी बनेंगे। अमरीका वालों ने भी कम नहीं किया है। एक-एक छोटे स्थान ने भी जितना उमंग उल्लास से अपनी हैसियत (ताकत) के हिसाब से बहुत ज्यादा किया। फारेन में मैजारिटी क्रिश्चयन का फिर भी राज्य तो है ना। अभी चाहे वह ताकत खत्म हो गई है, लेकिन धर्म तो नहीं छोड़ा है। चर्च छोड़ दी है लेकिन धर्म नहीं छोड़ा है। इसलिए पोप भी वहाँ राजा के समान है। राजा तक पहुँचे तो प्रजा में स्वत: ही रिगार्ड बैठत है। जो कट्टर क्रिश्चियन हैं उन्हों के लिए भी ये इग्जामपिल अच्छा है। इग्जा-म्पिल क्रिश्चियन के लिए निमित्त बनेगा। कृष्ण और क्रिश्चियन का कनेक्शन है ना। भारत का वातावरण फिर भी और होता है। सेक्यूरिटी आदि का बहुत होता है। लेकिन ये प्यार से मिला ये अच्छा है। रायलिटी से टाइम देना, विधिपूर्वक मिलना उसका प्रभाव डालता है। ये दिखाता है कि अभी समय समीप आ रहा है।

लण्डन में भी विदेश के हिसाब से बहुत अच्छी संख्या है और विशेष मुरली से प्यार है, पढ़ाई से प्यार है, ये फाउण्डेशन हैं। इसमें लण्डन का नम्बर वन है। कुछ भी हो जाए, कब क्लास मिस नहीं करते हैं। चार बजे का योग और क्लास का महत्व सबसे ज्यादा लण्डन में हैं। इसका भी कारण स्नेह है। स्नेह के कारण खिंचे हुए आते हैं। वातावरण शक्तिशाली बनाने पर अटेन्शन अच्छा है। वैसे भी दूर देश जो हैं वहाँ वायुमण्डल ही सहारा समझते हैं। चाहे सेवाकेन्द्र काक व अपना। जरा भी अगर कोई बात आती है तो फौरन अपने को चेक कर वातावरण शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न अच्छा करते हैं। वहाँ वातावरण पावरफुल बनाने का लक्ष्य अच्छा है। छोटी-छोटी बात में वातावरण को खराब नहीं करते हैं। समझते हैं कि वातावरण शक्तिशाली नहीं होगा तो सेवा में सफ-लता नहीं होगी। इसलिए यह अटेन्शन अच्छा रखते हैं। अपने पुरुषार्थ का भी और सेन्टर के वातावरण का भी। हिम्मत और उमंग में कोई कम नहीं हैं।

जहाँ भी कदम रखते हैं वहाँ अवश्य विशेष प्राप्ति ब्राह्मणों को भी होता है और देश को भी होता है। संदेश भी मिलता है और ब्राह्मणें में भी विशेष शक्ति बढ़ती और पालना भी मिलती। साकार रुप से विशेष पालना पाकर सभी खुश होते हैं। और उसी खुशी में सेवा में आगे बढ़ते और सफलता को पाते हैं। दूर देश में रहने वालों के लिए पालना तो जरुरी है। पालना पाकर उड़ते हैं। जो मधुबन में आ नहीं सकते वह वहाँ बैठे मधुबन का अनुभव करते हैं। जैसे यहाँ स्वर्ग का और संगमयुग का आनन्द दोनों अनुभव करते हैं। इसलिए ड्रामा अनुसार विदेश में जाने का पार्ट भी जो बना है वह आवश्यक है और सफलता भी है। हरेक विदेश के बच्चे अपने-अपने नाम से विशेष सेवा की मुबारक और विशेष सेवा की सफलता का रिटर्न यादप्यार स्वीकार करें। बाप के सामने एक-एक बच्चा है। हरेक देश का हरेक बच्चा नैनों के सामने आ रहा है। एक-एक को बापदादा यादप्यार दे रहे हैं। जो तड़पते हुए बच्चे हैं उन्हों की भी कमाल देख बापदादा सदा बच्चें के ऊपर स्नेह के पुष्पों की वर्षा करता है। बुद्धिबल उन्हों का कितना तेज है। दूसरा विमान नहीं है तो बुद्धि का विमान तेज है। उन्हों की बुद्धिबल पर बापदादा भी हर्षित होते ते हैं। हरेक स्थान की अपनी-अपनी विशेषता है। सिन्धी लोग भी अब समीप आ रहे हैं। जो आदि सो अन्त तो होना ही है।

ये भी जो भ्रान्ति बैठी हुई है कि ये सोशल वर्क नहीं करते हैं वह भी इस पदयात्रा को देख, ये भ्रान्ति भी मिट गई। अब क्रान्ति की तैयारी जोर शोर से हो रही है।

दिल्ली वाले भी पदयात्रियों का आह्वान कर रहे हैं। इतने ब्राह्मण घर में आयेंगे। ऐसे ब्राह्मण मेहमान तो भाग्यवान के पास ही आते हैं। देहली में सबको अधिकार है। अधिकारी को सत्कार तो देना है। देहली से ही विश्व में नाम जायेगा। अपनी-अपनी एरिया में तो कर ही रहे हैं। लेकिन देश-विदेश में तो देहली के ही टी.वी., रेडियो निमित्त बनेंगे।

(आज निर्मलशान्ता दादी भी आये पहुँची हैं) ये आदि रत्नों की निशाली है। हाँ जी पाठ सदा याद होते हुए शरीर को भी शक्ति देकर पहुँच गयी। आदि रत्नों में ये नेचुरल संस्कार है। कब ना नहीं करते। सदैव हाँ जी करते हैं। और हाँ जी ने ही बड़ा हजूर बनाया है। इसलिए बापदादा भी खुश हैं। हिम्मते बच्ची को मदद दे बाप ने स्नेह मिलन का फल दिया।

(दादी को) सभी को सेवा के उमंग उत्साह की मुबारक देना। और सदा खुशी के झूले में झूलते रहते, खुशी से सेवा में प्रत्यक्षता की लगन से अगे बढ़ते रहते हैं। इसलिए शुद्ध श्रेष्ठ संकल्प की सबको मुबारक हो। चार्ले, केन आदि जो ये पहला फल निकला, ये ग्रुप अच्छा रिटर्न ने रहे हैं। निर्मानता निर्माण का कार्य सहज करती है। जब तक निर्मान नहीं बने तब तक निर्माण नहीं कर सकते। ये परिवर्तन बहुत अच्छा है। सबको सुनना और समाना और सभी को स्नेह देना ये सफलता काक आधार है। अच्छी प्रोगेस की है। नये-नये पाण्डवों ने भी अच्छी मेहनत की है। अच्छा अपने में परिवर्तन लाया है। सब तरफ वृद्धि अच्छी हो रही है। अभी और नवीनता करने का प्लान बनाना। इतने तक तो सभी की मेहनत करने का फल निकला है जो पहले सुनते ही नहीं थे, वह समीप आये ब्राह्मण आत्मायें बन रही हैं। अभी और प्रत्यक्षता करने का कोई नया सेवा का साधन बनेगा। ब्राह्मणों का संगठन भी अच्छा है। अभी सेवा वृद्धि की ओर बढ़ रही है। एक बार वृद्धि शुरु हो जाती है तो फिर लहर चलती है। अच्छा।

11-11-85

दीपमाला - समीपता, सम्पन्नता और सम्पूर्णता का यादगार

सदा जागती जोत शिवबाबा बोले

आज विश्व की ज्योति जगाने वाले, जगे हुए दीपकों के मालिक अपनी दीपमाला को देख रहे हैं। वास्तविक दीपमाला आप सबका यादगार है। तो दीपकों का मालिक सच्ची दीपमाला देख रहे हैं। यह दीपमाला विचित्र माला है। विचित्र मालिक और विचित्र माला है। वे लोग तो न मालिक को जानते हैं न माला को जानते हैं। मालिक को जाने तो माला को भी जाने। दीपमाला आप सबकी तीन विशेषताओं का यादगार है—

एक है समीपता– समीपता में स्नेह समाया हुआ है। अगर माला में स्नेह का, समीपता काक आधान न हो तो माला नहीं बन सकती। मणका मणके से वा दीपक-दीपक से जब स्नेहह से समीप आता है तब ही माला कहलाई जाती है। स्नेह आर्थात् समीपता। स्नेह की निशानी समीपता ही होती है। एक समीपता। दूसरी – सम्पन्नता। दीपमाला सम्पन्नता की निशानी ही। सिर्फ एक लक्ष्मी धन की देवी नहीं है लेकिन आप सभी धन से सम्पन्न देवियाँ हो। धन देवी होने के कारण धन्य देवी भी गाये जाते हैं। तो धन देवी धन्य देवी यह सम्पन्ता की निशानी है। तीसरी बात सम्पूर्णता। सम्पूर्णता अर्थात् सदा जगे हुए दीपक। बुझे हुए दीपकों की दीपमाला नहीं कही जाती। जगे हुए दीपक की दीपमाला कही जाती। तो सदा एक रस जगे हुए दीपकों की निशानी सम्पूर्णता है। तो दीपमाला समीपता, सम्पन्ता और सम्पूर्णता की विशेषताओं का यादगार है। इसलिए दीपमाला को बड़ा दिन कहा जाता है।

जो भी उत्सव मनाते हैं उनको बड़ा दिन कहा जाता है। क्योंकि विश्व के बड़ों का दिन है। विश्व में सबसे बड़े ते बड़े कौन हैं? आप सभी अपने को समझते हो। तो यह तीनों ही विशेषतायें स्वयं में अनुभव करते हो? आप सभी का यादगार मना रहे हैं। याद स्वरुप

बनने वालों का यादगार बनता है। ऐसे याद स्वरुप बने हो? वा अभी भी कहेंगे बन रहे हैं। क्या कहेंगे? जग गये तो अंधकार समाप्त हो गया ना। जग गये अर्थात् अंधकार समाप्त। जग गये वा टिमटिमाने वाले हो? टिमटिमाते हुए दीपक कोई पसन्द नहीं करता। अभी बुझा, अभी जगा। लाइट भी अगर एकरस नहीं जलती तो पसन्द नहीं करेंगे। उसको बन्द कर देंगे ना। जगमगाते हुए दीपक और टिमटिमाते हुए दीपक। क्या पसन्द करेंगे?

बड़े दिन की छुट्टी क्यों मनाते हैं? जो भी बड़े दिन आते हैं उसमें छुट्टी मनाते हैं। और छुट्टी की खुशी होती है। हर मास के कैलेन्डर में पहले सब क्या देखते हैं? बड़े दिन कितने हैं, छुट्टियां कितनी हैं। तो बड़ा दिन अर्थात् छुट्टी का दिन। मेहनत से छुट्टी का दिन। मेहनत से छुट्टी का दिन और मुहब्बत के मजे में रहने का दिन। जब कमजोरियों को वा माया को छुट्टी दे देते हो तो मेहनत खत्म और मजे के दिन शुरु हो जाते हैं। बड़ा दिन अर्थात् छुट्टी का दिन। इसलिए यादगार रुप में भी छुट्टी मनाई जाती है। छुट्टी के दिन क्या करते हैं? मौज मनाते हैं ना। छुट्टी का दिन आराम का दिन होता है। आपका आराम क्या है? आप आराम करते हो? या आ-राम करते हो? आराम नहीं आ राम आ राम करते हो ना। इसी को ही वास्तविक आराम कहते हैं। दीपमाला में और क्या करते हो? मुबारक, बंधाईयां देते हो ना। कोई भी उत्सव आता है, जब एक दो से मिलते हैं तो बंधाई देते हो नो। यह रिवाज भी क्यों चला है? जब भी कोई को मुबारक देते हो तो कैसे देते हो? गले मिलते, हाथ भी मिलते, मिठाई खिलते, खुशी मनाते हैं। अपनी याद और प्यार देना और लेना इसमें भी मुबारक मानते हैं। तो संगम पर अर्थात् बड़े दिनों पर आप सभी सदाकाल के लिए माया के विदाई की बधाई मनाते हो। विजयी बनते हो। इसलिए विजयी बच्चों को बापदादा सदा मुबारक देते हैं। यादप्यार देते अर्थात् मुबारक देते। बापदादा रोज मुबारक देते हुए बापदादा हर रोज बच्चें को कौन-सा शब्द कहते हैं? मीठे-मीठे कह मुख मीठा कर देते हैं। बापदादा रोज मीठे-मीठे शब्द ही कहते हैं। मीठा का यादगार है। मुख मीठा करते रहते हो। ऐसी दीपमाला मनाने वाले हो वा आपकी दीपमाला मनाई जा रही है। आपने बाप के साथ मनाई है, इसलिए विश्व आपकी यादगार मनाता, समझा दीपमाला का अर्थ क्या है। बनना ही मनाना है।

दीपमाला के लिए आये हो। बापदादा भी दीपको की माला को देख हर्षित होते हैं। मिलना ही मनाना है। सभी मौजों के घर में पहुँच गये हो ना। मधुबन अर्थात् मौजों का घर। मन में मौज है तो हर कार्य में मौज है। किसी भी प्रकार की मूँझ नहीं। क्यों, क्या यह है मूँझ। ओहो, आहा यह है मौज। क्यों, क्या तो अब नहीं है ना । दशहरा तो मना के आये हो ना। अभी दिवाली मनाने आये हो। दशहरे के बिना दिवाली नहीं होती। दशहरा समाप्त करके दिवाली मनाने आये हो। विजयी हो गये हो ना। अच्छा।

बच्चें की वृद्धि होती जा रही है और होती रहेगी। वृद्धि प्रमाण विधि भी बनानी पड़ती है। अव्यक्त होते अभी १७ वर्ष का १७वाँ पाठ पूरा हुआ। बाकी क्या रहा है? फिर भी बापदादा बच्चें के स्नेह के कारण अव्यक्त होते भी व्यक्त में टेम्प्रेरी रथ में १७ साल सवारी की। १७ साल कम तो नहीं। समय और शरीर की सीमा भी होती है। नाम तो अव्यक्त कहते और मिलने चाहते व्यक्त में। यह क्यों? सहल गता है इसलिए? फिर भी बापदादा नये-नये बच्चें का उल्हना निभाने के लिए आते रहते हैं। अभी १८ तारीख को फिर १८ साल शुरु होगा। १८ अध्याय क्या है? सभी तैयार हो ना। सेवा समाप्त कर ली? अभी बाप समान अव्यक्त रुप बन जाओ। अव्यक्त रुप की सेवा की? अभी तो अव्यक्त रुप को भी व्यक्त में आना पड़ता है। अव्यक्त रुपधारी बन नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा अर्थात् स्मृति स्वरुप। अभी यह सेवा रही हुई है। पदयात्रा की सेवा तो कर ली, अब रुहानी यात्रा का अनुभव कराना है। अभी इसी यात्रा की आवश्यकता है। इसलिए अभी बापदादा भी अव्यक्त विधि प्रमाण बच्चों से मिलन मनायेंगे। वृद्धि प्रमाण विधि को परिवर्तन करना ही होता है। बच्चों का अधिकार है मुरली। मुरली द्वारा मिलना और अव्यक्त दृष्टि द्वारा यह दोनों मिलन वरदान की अनुभूति करा सकते हैं। इसलिए अव्यक्त स्थिति में स्थित हो अब दृष्टि द्वारा वरदानों का अनुभव करो। नहीं तो सुनने की जिज्ञासा से दृष्टि का महत्व कम अनुभव कर सकते हो।

दो गायन हैं– नजर से निहाल और मुरली का जादू। इसलिए अब दृष्टि द्वारा वरदान पाने के अधिकारी बनो। जितना स्वयं अव्यक्त स्थिति में स्थित होंगे उतना अव्यक्त दृष्टि की भाषा को कैच कर सकेंगे। यह दृष्टि का वरदान सदाकाल का परिवर्तन का वरदान है। वाणी का वरदान कभी याद रहता कभी भूल जाता है। लेकिन अव्यक्त रुप बन अव्यक्त दृष्टि से प्राप्त हुआ वरदान सदा स्मृति स्वरुप समर्थ स्वरुप बनाता है। अभी दृष्टि से दृष्टि की भाषा को जानो। स्थापना में क्या हुआ? दृष्टि की भाषा से दृष्टि से जादू से स्थापना का कार्य आरम्भ हुआ। समझा अच्छा फिर सुनायेंगे १८ अध्याय की सेवा क्या है।

बच्चे घर का श्रृंगार हैं। मधुबन का श्रृंगार मधुबन में पहुँच गये हो। भल मनाओ, गाओ-नाचो। लेकिन अव्यक्त रुप में। न्यारे और प्यारे रुप में। जो दुनिया करती है वह न्यारापन नहीं। खेलो खाओ, हंसो नाचो लेकिन न्यारे और प्यारे रहो। बापदादा सभी सेवाकेन्द्रों के देश-विदेश के बच्चों को, अपने गले के विजयी माला, दीपमाला को देखते हुए हर्षित हो रहे हैं और हरेक विजयी जगे हुए दीपक को संगमयुग और नई दुनिया के सर्व जन्मों को मुबारक दे रहे हैं। सदा समीप रहने वाले, सदा सम्पन्न बच्चों को त्रिमूर्ति सम्बन्ध से सदाकाल की मुबारक कहो, बधाई कहो, ग्रीटिंग्स कहो सदा है और सदा रहेगी।

बापदादा भी धनवान बच्चों को ''धन्य हो धन्य हो'' की मुबारक दे रहे हैं। सदा मीठे हैं, बनाने वाले हैं। मीठे बोल मीठी भावना से सबको मन और मुख मीठा कराने वाले। ऐसे सदा मीठा भव। बापदादा सभी बच्चों की जगमागाती हुई ज्योति देख रहे हैं। दूर होते भी अनेक बच्चें को जगमगाते हुए ज्योति समूह के रुप में बापदादा के समाने अभी भी हैं। सभी बच्चों की मुबारक के संकल्प, बोल, पत्र और कार्ड बापदादा के सामने हैं। सभी देश-विदेश के बच्चों के दीपमाला की मुबारक के रिटर्न में अक्षोणी बार बापदादा मुबारक दे रहे हैं। नाम नहीं लेते लेकिन नाम बापदादा के समाने हैं। हर एक के नामों की माला भी बापदादा के गले में पिराई हुई है। भिन्न-भिन्न कार्डस वतन की दीवार में लगे हुए हैं। लेकिन दिल काक आवाज दिलाराम तक पहुँच गया। दूर सो समीप बच्चों और सम्मुख आने वाले बच्चों दोनों को स्नेह सम्पन्नता और सम्पूर्णता भरी यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से:- माला के विजयी रत्न सदा ही विशेष गाये और पूजे जाते हैं। ऐसी विशेष पूज्य आत्मायें हो। जब कोई ऐसा दिन आता है तो जितना अव्यक्त स्थिति में स्थित होते हो उतना भक्त आत्माओं के आह्वान का अनुभव होता है। भक्तों की शुभ भावनायें वा कामनायें बाप द्वारा पूर्ण कराने के लिए विशेष वायब्रेशन आने चाहिए। आखिर सभी भक्त आत्मायें बाप के साथ अपनी पूज्य आत्माओं को प्रत्यक्ष रुप में देखेंगी। वर्णन करेंगी कि वही हमारे इष्ट देव हैं। इष्ट देव किसको बनाते हैं? इष्ट क्यों कहते हैं? क्योंकि उसी एक में एक बल एक भरोसा होता है। उसी में परिपक्व रहते हैं। उन्हों के लिए पही एक सब कुछ होता है। ऐसे जो एक बाप में इष्ट भावना वाले रहे हैं। इष्ट स्थिति वाले रहे हैं वही इष्ट देव बनते हैं। इसको कहते हैं एक बल एक भरोसे की स्थिति में, निश्चय में, सेवा में, परिपक्व रहे हैं। इसलिए इष्ट देव को मनाने वाले भक्त भी एकाग्र रहते हैं। यहॉ वहाँ नहीं भटकते हैं। एक में अटलरहते हैं। बाप प्रत्यक्ष होंगे लेकिन बाप के साथ-साथ सब इष्ट देव, इष्ट देवियाँ भी प्रत्यक्ष होंगे। यह भी नशा चाहिए कि हम श्रेष्ठ आत्मओं को आह्वान हो रहा है। और हम ही बाप द्वारा उन्हों को रिटर्न दिलाने वाले हैं। इसलिए वह इष्ट देव के रुप में पूजे जाते हैं। विशेष दिनों पर जैसे विशेष भक्त लोग व्रत रखते हैं, साधना करते हैं। एकाग्रता का विशेष अटेन्शन रखते हैं। ऐसे सेवाधारी बच्चों को भी वह वायब्रेशन आने चाहिए। हम ही हैं यह अनुभव होना चाहिए। बापदादा तो है ही लेकिन साथ में अनन्य बच्चे भी हैं। यह प्रैक्टिकल में महसूसता आनी चाहिए। जो आशीर्वाद, आशीर्वाद का रिवाज चला है, वह ऐसे अनुभव होगा। जैसे सम्पन्न होने के कारण ब्रह्मा बाप द्वारा चलते फिरते सबको स्वत: आशीर्वाद का अनुभव होता था। तो आप भी चलते फिरते ऐसे अनुभव करो जैसे बाप द्वारा कुछ न कुछ प्राप्ति करा रहे हैं। प्राप्ति ही आशीर्वाद हैं। और कुछ मुख से नहीं कहेंगे लेकिन प्राप्ति का अनुभव कराने के कारण सबके मुख से ''यही हैं, यहीं हैं'' के गीत निकलेंगे। वह भी दिन आने वाले हैं। साक्षात्कार मूर्त अभी होने चाहिए। अभी सेवा साक्षात्कार मूर्त द्वारा हो। जैसे शूरु में चलते फिरते साक्षात्कार मूर्त देखते थे। ब्राह्मा को नहीं देखते थे, कृष्ण को देखते थे। कृष्ण पर मोहित हुए ना। ब्रह्मा पर तो नहीं हुए। ब्रह्मा गुम होकर कृष्ण दिखाई देता था तब तो भागे ना। कृष्ण ने भगाया यह तो राइट है। क्योंकि ब्रह्मा को ब्रह्मा नहीं देखते कृष्ण देखते थे। तो यह साक्षात्कार स्वरुप हुआ ना। उसी ने इतना मस्त बनाया, भगाया। साक्षा-त्कार ने ही सब कुछ छुड़ाया। भक्ति का साक्षात्कार सिर्फ देखने कार हेता है। लेकिन ज्ञान का होता है देखेने के साथ पाना – यही अन्तर है। सिर्फ देखा नहीं, पाया। कृष्ण हमारा है, हम गोपियाँ हैं, इसी नशे ने स्थापना कराई। हम वही हैं हमारे ही चित्र हैं। तो ऐसे ही साक्षात्कार द्वारा अभी भी सेवा हो। सुनने द्वारा प्रभाव तो पड़ता ही है लेकिन परिवर्तन नहीं होता है। अच्छा-अच्छा कहते हैं लेकिन अच्छा बनते नहीं। जब उन्हें साक्षात्कार में प्राप्ति होगी तो बनने के बिना रह नहीं सकेंगे। जैसे आप सब बन गये हो ना। तो अभी चलते फिरते फरिश्ते स्वरुप का साक्षात्कार कराओ। सिर्फ भाषण वाले नहीं लेकिन साक्षात्कार स्वरुप दिखाई दे। भाषण करने वाले तो बहुत हैं लेकिन आप हो भासना देने वाले। ऐसे जो बनते हैं वही नम्बर आगे लेते हैं। सिर्फ क्लास कराने से भासना नहीं आती, क्लास सुनते भी हरेक की चहाना होती कि भासना मिले तो अब भाषण बदलकर भासना दो। तब समझेंगे कि यह अल्लाह लोग हैं। अल्लाह लोग अर्थात् न्यारे। अभी तो कह देते हैं यह भी अच्छा वह भी अच्छा। मिलाते रहते हैं लेकिन अभी भासना स्वरुप बन जाओ। प्राप्ति का अनुभव कराओ।

13-11-85

संकल्प, संस्कार, सम्बन्ध बोल और कर्म में नवीनता लाओ

अव्यक्त बापदादा बोले:-

आज नई दुनिया के नई रचना के रचयिता बाप अपने नई दुनिया के अधिकारी बच्चों को अर्थात् नई रचना को देख रहे हैं। नई रचना सदा ही प्यारी लगती है। दुनिया के हिसाब से पुराने युग में नया वर्ष मनाते हैं। लेकिन आप नई रचना के नये युग की नई जीवन की अनुभूति कर रहे हो। सब नया हो गया। पुराना समाप्त हो नया जन्म नई जीवन प्रारम्भ हो गई। जन्म नया हुआ तो जन्म से जीवन स्वत: ही बदलती है। जीवन बदलना अर्थात् संकल्प, संस्कार, सम्बन्ध सब बदल गया अर्थात् नया हो गया। धर्म नया, कर्म नया। वह सिर्फ वर्ष नया कहते हैं। लेकिन आप सबके लिए सब नया हो गया। आज केदिन अमृतवेले से नये वर्ष की मुबारक

तो दी लेकिन सिर्फ मुख से मुबारक दी वा मन से? नवीनता का संकल्प लिया? इन विशेष तीन बातों की नवीनता का संकल्प किया? संकल्प, संस्काकर और सम्बन्ध। संस्कार और संकल्प नया अर्थात् श्रेष्ठ बन गया। नया जन्म, नई जीवन होते हुए भी अब तक पुराने जन्म वा जीवन के संकल्प, संस्कार वा सम्बन्ध रह तो नहीं गये हैं? अगर इन तीनों बातों में से कोई भी बात में अंश मात्र पुरानापन रहा हुआ है तो यह अंश नई जीवन का नये युग का, नये का सम्बन्ध, नये संस्कार का सुख वा सर्व प्राप्ति से वंचित कर देगा। कई बच्चे ऐसे बापदादा के आगे अपने मन की बातें रुह-रुहान में कहतेरहते हैं। बाहर से नहीं कहते। बाहर से तो कोई भी पूछता है – कैसे हो? तो सब यही कहते हैं कि बहुत अच्छा। कयोंकि जानते हैं बाहरयामी आत्मायें अन्दर को क्या जाने। लेकिन बाप से रुह-रुहान में छिपा नहीं सकते। अपने मन की बातों में यह जरुर कहते ब्राह्मण तो बन गये, शूद्र पन से किनारा कर लिया लेकिन जो ब्राह्मण जीवन की महानता, विशेषता सर्वश्रेष्ठ प्राप्तियों की वा अतीन्द्रिय सुख फरिश्तेपन की, डबल लाइट जीवन, ऐसा विशेष अनुभव जितना होना चाहिए उतना नहीं होता। जो वर्णन इस श्रेष्ठ युग के श्रेष्ठ जीवन का ऐसा अनुभव ऐसी स्थिति बहुत थोड़ा समय होती। इसका कारण क्या? जब ब्राह्मण बने, ब्राह्मण जीवन का अधिकार अनुभव नहीं होता, क्यों? है राजा का बच्चा लेकिन संस्कार भिखारीपन के हो तो उनको क्या कहेंगे? राजाकुमार कहेंगे? यहाँ भी नया जन्म, नई ब्राह्मण जीवन और फिर भी पुराने संकल्प वा संस्कार इमर्ज हों वा कर्म में हों तो क्या वह ब्रह्माकुमार कहेंगे। वा आधा शूद्र कुमार और आधा ब्रह्माकुमार। ड्रामा में एक खेल दिखाते हो ना आधा सफेद आधा काला। संगमयुग इसको तो नहीं समझा है। संगमयुग अर्थात् नया युग। नया युग तो सब नया।

बापदादा आज सबकी आवाज सुन रहे थे – नये वर्ष की मुबारक हो। कार्डस भी भेजते पत्र भी लिखते लेकिन कहना और करना दोनों एक हैं? मुबारक तो दी, बहुत अच्छा किया। बापदादा भी मुबारक देते हैं। बापदादा भी कहते सबके मुख के बोल में अविनाशी भव का वरदान। आप लोग कहते हो ना मुख में गुलाब? बापदादा कहते मुख के बोल में अविनाशी वरदान हो। आप से सिर्फ एक शब्द याद रखना – ''नया''। जो भी संकल्प करो, बोल बोले, कर्म करो यही चेक करो याद रखो कि नया है? यही पोतामेल चौपड़ा, रजिस्टर आज से शुरु करो। दीपमाला में चौपड़े पर क्या करते हैं? स्वास्तिका निकालते हैं ना। गणेश। और चारों ही युग में बिन्दी जरुर लगाते हैं। क्यों लगाते हैं? किसी भी कार्य को प्रारम्भ करते समय स्वास्तिका वा गणेश नम: जरुर कहते हैं। यह किसकी यादगार है। स्वास्तिका को भी गणेश क्यों कहते? स्वास्तिका स्वस्थिति में स्थित होन का और पूरी रचना की नालेज का सूचक है। गणेश अर्थात् नालेजफुल। स्वास्तिका के एक चित्र में पूरी नालेज समाई हुई है। नालेजफुल की स्मृति का यादगार गणेश वा स्वास्तिका दिखाते हैं। इसका अर्थ क्या हुआ। कोई भी कार्य की सफलता का आधार है। नालेजफुल अर्थात् समझदार, ज्ञान स्वरुप बनना। ज्ञान स्वरुप समझदार बन गये तो हर कर्म श्रेष्ठ और सफल होगा ना। वो तो सिर्फ कागज पर निशानी यादगार को लगा देते हैं लेकिन आप ब्राह्मण आत्मायें स्वयं नालेजफुल बन हर संकल्प करेंगी तो संकल्प और सफलता दोनों साथ-साथ अनुभव करेंगे। तो आज से यह दृढ़ संकल्प के रंग द्वारा अपने जीवन के चौपड़े पर हर संकल्प संस्कार नया ही होना है। होगा, यह भी नहीं। होना ही है। स्वस्थिति में स्थित हो यह श्रीगणेश अर्थात् आरम्भ करो। स्वयं श्रीगणेश बन करके आरम्भ करो। ऐसे नहीं सोचो यह तो होता ही रहता है। संकल्प बहुत बार करते, लेकिन संकल्प दृढ़ हो। जेसे फाउन्डेशन में पक्का सीमेन्ट आदि डालकर मजबूत किया जाता है – ना। अगर रेत का फाउन्डेशन बना दें तो, कितना समय चलेगा? तो जिन समय संकल्प करते हो उस समय कहते करके देखेंगे, जितना हो सकेगा करेंगे। दूसरे भी तो ऐसे ही करते हैं। यह यह रेत मिला देते हो। इसीलिए फाउन्डेशन पक्का नहीं होता। दूसरों को देखना सहज लगता है। अपने को देखने में मेहनत लगती है। अगर दूसरों को देखने चाहते हो, आदत से मजबूर हो तो ब्रह्मा बाप को देखो। वह भी तो दूसरा हुआ ना। इसलिए बापदादा ने दीपावली का पोतामेल देखा। पोतामेल में विशेष कारण, ब्राह्मण बनते भी ब्राह्मण जीवन की अनुभूति न होना। जितना होना चाहिए उतना नहीं होता। इसका विशेष कारण है – परदृष्टि, परचिंतन, परपंच में जातना। परिस्थितियों के वर्णन और मनन में ज्यादा रहते हैं। इसलिए स्वदर्शन चक्रधारी बनो। स्व से पर खत्म हो जायेगा। जैसे आज नये वर्ष की सबने मिलकर मुबारक दी ऐसे हर दिल नया दिन, नई जीवन, नया संकल्प, नये संस्कार, स्वत: ही अनुभव करेंगे। और मन से हर घड़ी बाप के प्रति, ब्राह्मण परिवार के प्रति बधाई के शुभ उमंग स्वत: ही उत्पन्न होते रहेंगे। सबकी दृष्टि में मुबारक, बधाई, ग्रीटिंग्स की लहर होगी। तो ऐसे आज के मुबारक शब्द को अविनाशी बनाओ। समझा। लोग पोतामेल रखते हैं। बाप ने पोतामेल देखा। बापदादा को बच्चों पर रहम आता है कि सारा मिलते भी अधूरा क्यों लेते? नाम नया ब्रह्माकुमार वा कुमारी और काम मिक्स क्यों? दाता के बच्चे हो, विधाता के बच्चे हो, वरदाता के बच्चे हो। तो नये वर्ष में क्या याद रखेंगे? सब नया करना है। अर्थात् ब्राह्मण जीवन की मर्यादा का सब नया। नया का अर्थि कोई मिक्सचन नहीं करना। चतुर भी बहुत बन गये हैं ना। बाप को भी पढ़ाते हैं। कई बच्चे कहते हौ ना बाबा ने कहा था ना नया करना है तो यह नया हम कर रहे हैं। लेकिन ब्राह्मण जीवन की मर्यादा प्रमाण नया हो। मर्यादा की लकीर तो ब्राह्मण जीवन, ब्राह्मण जन्म से बापदादा ने दे दी है। समझा नया वर्ष कैसे मनाना है। सुनाया ना – १८ अध्याय शुरु हो रहा है।

गोल्डन जुबली के पहले विश्वविद्यालय की गोल्डन जुबली है। ऐसे नहीं समझना कि सिर्फ ५० वर्ष वालों की गोल्डन जुबली है। लेकिन यह ईश्वरीय कार्य की गोल्डन जुबली है। स्थाना के कार्य में जो भी सहयोगी हो चाहे दो वर्ष के हों चाहे ५० वर्ष के हों लेकिन दो वर्ष वाले भी अपने को ब्रह्माकुमार कहते हैं ना या और कोई नाम कहते। तो यह ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मणें के रचना की गोल्डन जुबली है। इसमें सब ब्रह्माकुमार कुमारियाँ हैं। गोल्डन जुबली तक अपने में गोल्डर एजड अर्थात् सतोप्रधान संकल्प संस्कार इमर्ज करने हैं। ऐसी गोल्डन जुबली मनानी है। यह तो निमित्त मात्र रसम रिवाज की रीति से मनाते हो लेकिन वास्तविक गोल्डन जुबली गोल्डन ऐजड बनने की जुबली है। कार्य सफल हुआ अर्थात् कार्य अर्थ निमित्त् आत्मयें सफलता स्वरुप बने। अभी भी समय पड़ा है। इन ३ मास के अन्दर दुनिया की स्टेज के आगे निराली गोल्डन जुबली मनाके दिखाओ। दुनिया वाले सम्मान देते हैं और यहाँ समान की स्टेज की प्रत्यक्षता करानी है। सम्मान देने के लिए कुछ भी करते हो यह तो निमित्त मात्र है। वास्तविकता दुनिया के आगे दिखानी है। हम सब एक हैं एक के हैं, एकरस स्थिति वाले हैं। एक की लगन में मगन रह एक का नाम प्रत्यक्ष करने वाले हैं यह न्यारा और प्यारा गोल्डन स्थति का झण्डा लहराओ। गोल्डन दुनिया के नजारे आपके नयनों द्वारा बोल और कर्म द्वारा स्पष्ट दिखाई दे। ऐसी गोल्डन जुबली मनाना। अच्छा–

ऐसे सदा अविनाशी मुबारक के पात्र श्रेष्ठ बच्चों को, अपने हर संकल्प और कर्म द्वारा नये संसार का साक्षात्कार कराने वाले बच्चों को, अपनी गोल्डन ऐजड स्थिति द्वारा गोल्डन दुनिया आई कि आई ऐसा शुभ आशा का दीपक विश्व की आत्माओं के अन्दर जगाने वाले, सदा जगमगाते सितारों को, सफलता के दीपकों को दृढ़ संकल्प द्वारा नये जीवन का दर्शन कराने वाले, दर्शनीय मूर्त बच्चों को बापदादा का यादप्यार, अविनाशी बधाई, अविनाशी वरदान के साथ नमस्ते।

पदयात्रियों तथा साइकिल यात्रियों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

यात्रा द्वारा सेवा तो सभी ने की। जो भी सेवा की उस सेवा का प्रत्यक्ष फल भी अनुभव किया। सेवा की विशेष खुशी अनुभव की है ना। पदयात्रा तो की, सभी ने आपको पदयात्री के रुप में देखा। अभी रुहानी यात्री के रुप में देखें। सेवा के रुप में तो देखा लेकिन अभी इतनी न्यारा यात्रा कराने वाले अलौकिक यात्री हैं, यह अनुभव हो। जेसे इस सेवा में लगन से सफलता को पाया ना। ऐसे अभी रुहानी यात्रा में सफल होना है। मेहनत करते हैं, बहुत अच्छी सेवा करते हैं, सुनाते बहुत अच्छा हैं इन्हों की जीवन बहुत अच्छी है, यह तो हुआ। लेकिन अभी जीवन बनाने जग जाएं, ऐसा अनुभव करें कि इसी जीवन के बिना और कोई जीवन ही नहीं है। तो रुहानी यात्रा का लक्ष्य रख रुहानी यात्रा का अनुभव कराओ। समझा क्या करना है। चलते-फिरते ऐसे ही देखें कि यह साधारण नहीं है। यह रुहानी यात्री हैं तो क्या करना है! स्वयं भी यात्रा में रहो और दूसरों को भी यात्रा का अनुभव कराओ। पदयात्रा का अनुभव कराया अभी फरिश्ते पन का अनुभव कराओ। अनुभव करें कि यह इस धरनी के रहने वाले नहीं हैं। यह फरिश्ते हैं। इन्हों के पांव इस धरती पर नहीं रहते। दिन प्रतिदिन उड़ती कला द्वारा औरों को उड़ाना। अभी उड़ाने का समय है। चलाने का समय नहीं है। चलने में समय लगता और उड़ने में समय नहीं लगता। अपनी उड़ती कला द्वारा औरों को भी उड़ाओ। समझा। ऐसे दृष्टि से स्मृति से सभी को सम्पन्न बनाते जाओ। वह समझें कि हमको कुछ मिला है। भरपूर हूए हैं। खाली थे लेकिन भरपूर हो गये। जहाँ प्राप्ति होती है वहाँ सेकण्ड में न्योछावर होते हैं। आप लोगों को प्राप्ति हुई तब तो छोड़ा ना। अच्छा लगा अनुभव किया तब छोड़ा ना। ऐसे तो नहीं छोड़ा। ऐसे ओरों को प्राप्ति का अनुभव कराओ। समझा! बाकी अच्छा है! जो भी सेवा में दिन बिताये वह अपने लिए भी औरों के लिए भी श्रेष्ठ बनायें। उमंग उत्साह अच्छा रहा! रिजल्ट ठीक रही ना। रुहानी यात्रा सदा रहेगी तो सफलता भी सदा रहेगी। ऐसे नहीं पदयात्रा पूरी की तो सेवा पूरी हुई। फिर जेसे थे वैसे। नहीं। सदा सेवा के क्षेत्र में सेवा के बिना ब्राह्मण नहीं रह सकते। सिर्फ सेवा का पार्ट चेन्ज हुआ। सेवा तो अन्त कर करनी है। ऐसे सेवाधारी हो ना या तीन मास दो मास के सेवाधारी हो! सदा के सेवाधारी सदा ही उमंग उत्साह रहे। अच्छा। ड्रामा में जो भी सेवा का पार्ट मिलता है उसमें विशेषता भरी हुई है। हिम्मत से मददे का अनुभव किया। अच्छा। स्वयं द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करने का श्रेष्ठ संकल्प रहा। क्योंकि जब बाप को प्रत्यक्ष करेंगे तब इस पुरानी दुनिया की समाप्ति हो अपना राज्य आयेगा। बाप को प्रत्यक्ष करना अर्थात् अपना राज्य लाना। अपना राज्य लाना है यह उमंग उत्साह सदा रहता है ना! जैसे विशेष प्रोग्राम में उमंग उत्साह रहा ऐसे सदा इस संकल्प का उमंग उत्साह। समझा।

पार्टियों से:- सुना तो बहुत है! अभी उसी सुनी हुई बातों को समाना है। कयोंकि जितना समायेंगे उतना बाप के समान शक्तिशाली बनेंगे। मास्टर हो ना। तो जैसे बाप सर्वशक्तिमान है ऐसे आप सभी भी मास्टर सर्वशक्तिवान अर्थात् सर्व शक्तियों को समाने वाले। बाप समान बनने वाले हो ना। बाप और बच्चों में जीवन के आधार से अन्तर नहीं दिखाई दे। जेसे ब्रह्मा बाप की जीवन देखी तो ब्रह्मा बाप और बच्चे समान दिखाई दें। साकार में तो ब्रह्मा बाप कर्म करके दिखाने के निमित्त बने ना। ऐसे समान बनना अर्था मास्टर सर्वशक्तिवान बनना। तो सर्वशक्तियाँ हैं? धारण तो की है लेकिन परसेन्टेज है। जितना होना चाहिए उतना नहीं है। सम्पन्न नहीं है। बनना तो सम्पन्न है ना! तो परसेन्टेज को बढ़ाओ। शक्तियों को समय पर कार्य में लगाना इसी पर ही नम्बर मिलते हैं। अगर समय पर कार्य में नहीं आती तो क्या कहेंगे? होते भी न होना ही कहेंगे क्योंकि समय पर काम में नही आई। तो चेक करो कि समय

प्रमाण जिस शक्ति की आवश्यकता वह कार्य में लगा सकते हैं? तो बाप समान मास्टर सर्वशक्तिवान प्रत्यक्ष रुप में विश्व को दिखाना है। तब तो विश्व मानेगा कि हाँ सर्वशक्तिमान प्रत्यक्ष हो चुक। यही लक्ष्य है ना! अभी देखेंगे कि गोल्डन जुबली तक कौन लेते हैं। अच्छा–

18-11-85

भगवान के भाग्यवान बच्चों के लक्षण

भाग्य विधाता बापदादा बोले:-

बापदादा सभी बच्चों के मस्तक पर भाग्य की रेखायें देख रहे हैं। हर एक बच्चे के मस्तक पर भाग्य की रेखायें लगी हुई है लेकिन किस-किस बच्चों की स्पष्ट रेखायें हैं और कोई-कोई बच्चों की स्पष्ट रेखायें नहीं है। जब से भगवान बाप के बने, भगवान अर्थात् भाग्य विधाता। भगवान अर्थात् दाता विधाता। इसलिए बच्च् बनने से भाग्य का अधिकार अर्थात् वर्सा सभी बच्चों को अवश्य प्राप्त होता है। परन्तु उस मिले हए वर्से को जीवन में धारण करना, सेवा में लगाकर श्रेष्ठ बनाना स्पष्ट बनाना इसमें नम्बरवार हैं। क्योंकि यह भाग्य जितना स्व्यं प्रति वा सेवा प्रति कार्य में लगाते हो उतना बढ़ता है। अर्थात् रेखा स्पष्ट होती है। बाप एक है और देता भी सभी को एक जैसा है। बाप नम्बरवार भाग्य नहीं बांटता लीकिन भाग्य बनाने वाले अर्थात् भाग्यवान बनने वाले इतने बड़े भाग्य को प्राप्त करने में यथाशक्ति होने के कारण नम्बरवार हो जाते हैं। इसलिए कोई की रेखा स्पष्ट हैं, कोई की स्पष्ट नहीं है। स्पष्ट रेखा वाले बच्चे स्वयं भी हर कर्म में अपने भाग्यवान अनुभव करते। साथ-साथ उन्हों के चेहरे और चलने से भाग्य औरों को भी अनुभव होता है। और भी ऐसे भाग्यवान बच्चों को देख सोचते और कहते कि यह आत्मायें बड़ी भाग्यवान हैं। इनका भाग्य सदा श्रेष्ठ है। अपने आप से पूछो हर कर्म में अपने को भगवान के बच्चे भाग्यवान अनुभव करते हो? भाग्य आपका वर्सा है। वर्सा कभी न प्राप्त हो यह हो नहीं सकता। भीग्य को वस के रुप में अनुभव करते हो? वा मेहनत करनी पड़ती है। वर्सा सहज प्राप्त होता है। मेहनत नहीं। लौकिक में भी बाप के खजाने पर, वर्से पर बच्चे का स्वत: अधिकार होता है। और नशा रहता है कि बाप का वर्सा मिला हुआ है। ऐसे भाग्य का नशा है वा चढ़ता और उतरता रहता है? अविनाशी वर्सा है तो कितना नशा होना चाहिए। एक जन्म तो क्या अनेक जन्मों का भाग्य जन्मसिद्ध अधिकार है। ऐसी फलक से वर्णन करते हो। सदा भाग्य की झलक प्रत्यक्ष रुप में औरों को दिखाई दे। फलक और झलक दोनों हैं? मर्ज रुप में हैं इमर्ज रुप हैं? भाग्यवान आत्माओं की निशानी – भाग्यवान आत्मा सदा चाहे गोदी में पलती, चाहे गलीचों पर चलती, झूलों में झूलती, मिट्टी में पांव नहीं रखती, कभी पांव मैले नहीं होते। वो लोग गलीचों पर चलते और आप बुद्धि रुपी पांव से सदा फर्श के बजाए फरिश्तों की दुनिया में रहते। इस पुरानी मिट्टी की दुनिया में बुद्धि रुपी पांव नहीं रखते अर्थात् बुद्धि मैली नहीं करते। भाग्यवान मिट्टी के खिलौने से नहीं खेलते। सदा रत्नों से खेलते हैं। भाग्यवान सदा सम्पन्न रहते। इसलिए इच्छा मात्रम् अविद्या इसी स्थिति में रहते हैं। भाग्यवान आत्मा सदा महादानी पुण्य आत्मा बन औरों का भी भाग्य बनाते रहते हैं। भागयवान आत्मा सदा ताज, तख्त और तिलकधारी रहती है। भाग्यवान आत्मा जितना ही भाग्य अधिकारी उतना ही त्यागधारी आत्मा होती है। भाग्य की निशानी त्याग है। त्याग भाग्य को स्पष्ट करता है। भाग्यवान आत्मा, सदा भगवान समान निराकारी, निरअंहकारी और निर्विकारी इन तीनों विशेषताओं से भरपूर होती है। यह सब निशानियाँ अपने में अनुभव करते हो? भाग्यवान की लिस्ट में तो हो ही ना। लेकिन यथाशक्ति हो वा सर्वशक्तिवान हो? मास्टर तो हो ना? बाप की महिमा में कभी यथा शक्ति वा नम्बरवार नहीं कहा जाता सदा सर्वशक्तिवान कहते हैं। मास्टर सर्वशक्तिवान फिर यथाशक्ति क्यों? सदा शक्तिवान। यथा शब्द को बदल सदा शक्तिवान बनो और बनाओ। समझा।

कौन से जोन आये हैं? सभी वरदान भूमि में पहुँच वरदानों से झोली भर रहे हो ना। वरदान भूमि के एक-एक चरित्र में कर्म में विशेष वरदान भरे हुए हैं। यज्ञ भूमि में आकर चाहे सब्जी काटते हो, अनाज साफ करते हो, इसमें भी यज्ञ सेवा का वरदान भरा हुआ है। जैसे यात्रा पर जाते हैं, मन्दिर की सफाई करना भी एक बड़ा पुण्य समझते हैं। इस महातीर्थ वा वरदान भूमि के हर कर्म में हर कदम में वरदान ही वरदान भरू हुए हैं। कितनी झोली भरी है? पूरी झोली भर करके जायेंगे या यथाशक्ति? जो भी जहाँ से भी आये हो, मेला मनाने आये हो। मधुबन में एक संकल्प भी वा एक सेकण्ड भी व्यर्थ न जाए। समर्थ बनने का यह अभ्यास अपने स्थान पर भी सहयोग देगा। पढ़ाई और परिवार – पढ़ाई का भी लाभ लेना और परिवार का भी अनुभव विशेष करना। समझा!

बापदादा सभी जोन वालों को सदा वरदानी महादानी बनने की मुबारक दे रहे हैं। लोगों का उत्सव समाप्त हुआ लेकिन आपका उत्साह भरा उत्सव सदा है। सदा बड़ा दिन है। इसलिए हर दिन मुबारक ही मुबारक है। महाराष्ट्र सदा महान बन महान बनाने के वरदानों से झोली भरने वाले हैं। कर्नाटक वाले सदा अपने हर्षित मुख द्वारा स्वयं भी सदा हर्षित और दूसरों को भी सदा हर्षित बनाते, झोली भरते रहना। यू.पी. वाले क्या करेंगे? सदा शीतल नदियों के समान शीतलता का वरदान दे शीतला देवियाँ बन शीतला देवी बनाओ। शीतला से सदा सर्व के सभी प्रकार के दु:ख दूर करो। ऐसे वरदानों से झोली भरो। अच्छा–

सदा श्रेष्ठ भाग्य के स्पष्ट रेखाधारी, सदा बाप समान सर्व शक्तियाँ सम्पन्न, सम्पूर्ण स्थिति में स्थित रहने वाले, सदा ईश्वरीय झलक और भाग्य की फलक में रहने वाले, हर कर्म द्वारा भाग्यवान बन भाग्य का वर्सा दिलाने वाले ऐसे मास्टर भगवान श्रेष्ठ भाग्यवान बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पार्टियों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

कुमारों से:- कुमार अर्थात् निर्बन्धन। सबसे बड़ा बन्धन मन के व्यर्थ संकल्पों का है। इसमें भी निर्बन्धन। कभी-कभी यह बन्धन बांध तो नहीं लेता है? क्योंकि संकल्प शक्ति हर कदम में कमाई का आधार है। याद की यात्रा किस आधार से करते हो? संकल्प शक्ति के आधार से बाबा के पास पहुँचते हो ना! अशरीरी बन जाते हो। तो मन की शक्ति विशेष है। व्यर्थ संकल्प मन की शक्ति को कमजोर कर देते हैं। इसलिए इस बन्धन से मुक्त। कुमार अर्थात् सदा तीव्र पुरुषार्थी। क्योंकि जो निर्बन्धन होगा उसकी गति स्वत: तीव्र होगी। बोझ वाला धीमी गति से चलेगा। हल्का सदा तीव्रगति से चलेगा। अभी समय के प्रमाण पुरुषार्थ का समय गया। अब तीव्र पुरुषार्थी बन मंजिल पर पहुँचना है।

२. कुमारों ने पुराने व्यर्थ के खाते को समाप्त कर लिया है? नया खाता समर्थ खाता है। पुराना खाता व्यर्थ है। तो पुराना खाता खत्म हुआ। वैसे भी देखो व्यवहार में कभी पुराना खाता रखा नहीं जाता है। पुराने को समाप्त कर आगे खाते को बढ़ाते रहते हैं। तो यहाँ भी पुराने खाते को समाप्त कर सदा नये ते नया हर कदम में समर्थ हो। हर संकल्प समर्थ हो। जैसा बाप वैसे बच्चे। बाप समर्थ है तो बच्चे भी फालो फादर कर समर्थ बन जाते हैं।

माताओं से:- मातायें किस एक गुण में विशेष अनुभवी हैं? वह विशेष गुण कौन-सा? (त्याग है, शहनशीलता है) और भी कोई गुण है? माताओं का स्वरुप विशेष रहमदिल का होता है। मातायें रहमदिल होती हैं। आप बेहद की मातों को बेहद की आत्माओं के प्रति रहम आता है? जब रहम आता है तो क्या करती है? जो रहमदिल होते हैं वह सेवा के सिवाए रह नहीं सकते हैं। जब रहम-दिल बनते हो तो अनेक आत्माओं का कल्याण हो ही जाता है। इसलिए माताओं को कल्याणी भी कहते हैं। कल्याणी अर्थात् कल्याण करने वाली। जैसे बाप को विश्व कल्याणकारी कहते हौ वैसे माताओं को विशेष बाप समान कल्याणी का टाइटिल मिला हुआ है। ऐसे उमंग आता है! क्या से क्या बन गये! स्व के परिवर्तन से औरों के लिए भी उमंग उत्साह आता है। हद की और बेहद की सेवा का बैलेन्स है? उस सेवा से तो हिसाब चुक्तू होता है, वह हद की सेवा है। आप तो बेहद की सेवाधारी हो। जितना सेवा का उमंग उत्साह स्वयं में होगा उतना सफलता होगी।

२. मातायें अपने त्याग और तपस्या द्वारा विश्व का कल्याण करने के निमित्त बनी हुई हैं। माताओं में त्याग और तपस्या की विशे-षता है। इन दो विशेषताओं से सेवा के निमित्त् बन औरों को भी बाप का बनाना, इसी में बिली रहती हो? संगमयुगी ब्राह्मणों का काम ही है सेवा करना। ब्राह्मण सेवा के बिना रह नहीं सकते। जैसे नामधारी ब्राह्मण कथा जरूर करेंगे। तो यहाँ भी कथा करना अर्थात् सेवा करना। तो जगतमाता बन जगत के लिए सोचो। बेहद के बच्चों के लिए सोचो। सिर्फ घर में नहीं बैठ जाओ बेहद के सेवाधारी बन सदा आगे बढ़ते चलो। हद में ६३ जन्म हो गये अभी बेहद सेवा में आगे बढ़ो। अच्छा – ओम् शान्ति।

20-11-85

ब्राह्मणों का संगमयुगी न्यारा, प्यारा श्रेष्ठ संसार

सदा न्यारे और प्यारे शिव बाबा बोले:-

आज ब्राह्मणों के रचयिता बाप अपने छोटे से अलौकिक सुन्दर संसार को देख रहे हैं। यह ब्राह्मण संसार सतयुगी संसार से भी अति प्यारा और अति प्यारा है। इस अलौकिक संसार की ब्राह्मण आत्मायें कितनी श्रेष्ठ हैं विशेष हैं। देवता रूप से भी यह ब्राह्मण स्वरुप विशेष है। इ संसार की महिमा है, न्यारापन है। इस संसार की हर आत्मा विशेष है। हर आत्मा ही स्वराज्यधारी राजा है। हर आत्मा स्मृति की तिलकधारी, अविनाशी तिलकधारी, स्वराज्य तिलकधारी, परमात्म दिल तख्तनशीन है। तो सभी आत्मायें इस सुन्दर संसार की ताज, तख्त और तिलकधारी हैं! ऐसा संसार सारे कल्प में कभी सुना वा देखा! जिस संसार की हर ब्राह्मण आत्मा का एक बाप, एक ही परिवार, एक ही भाषा, एक ही नालेज अर्थात् ज्ञान, एक ही जीवन का श्रेष्ठ लक्ष्य, एक ही वृत्ति एक ही दृष्टि, एक ही धर्म और एक ही ईश्वरीय कर्म है। ऐसा संसार जितना छोटा उतना प्यारा है। ऐसे सभी ब्राह्मण आत्मायें मन में गीत गाती हो कि हमारा छोटा-सा यह संसार अति न्यारा अति प्रुरा है। यह गीत गाती हो? यह संगमयुगी संसार देख-देख हर्षित होते हो? कितना न्यारा संसार है। इस संसार की दिनचर्या ही न्यारी है। अपना राज्य, अपने नियम, अपनी रीति-रसम, लेकिन रीति भी न्यारी है प्रीति भी प्यारी है। ऐसे संसार में रहने वाली ब्राह्मण आत्मायें हो ना! इसी संसार में रहते हो ना? कभी अपने संसार को छोड़ पुराने संसार में तो नहीं चले जाते हो! इसलिए पुराने संसार के लोग समझ नहीं सकते कि आखिर भी यह ब्राह्मण हैं क्या! कहते हैं ना ब्रह्माकुमा-रियों की चल ही अपनी है। ज्ञान ही अपना है। जब संसार ही न्यारा है तो सब नया और न्यारा ही होगा ना। सभी अपने आप को

देखो कि नये संसार के नये संकल्प, नई भाषा नये कर्म, ऐसे न्यारे बने हो! कोई भी पुरानापन रह तो नहीं गया है। जरा भी पुरानापन होगा तो वह पुरानी दुनिया के तरफ आकर्षित कर देगा। और ऊंचे संसार से नीचे के संसार में चले जायेंगे। ऊंचा अर्थात् श्रेष्ठ होने के कारण स्वर्ग को ऊंचा दिखाते हैं और नर्क को नीचे दिखाते हैं। संगमयुगी स्वर्ग सतयुगी स्वर्ग से भी ऊंचा है। क्योंकि अभी दोनों संसार के नालेजफुल बने हो। यहॉ अभी देखते हुए जानते हुए न्यारे और प्यारे हो। इसलिए मधुबन को स्वर्ग अनुभव करते हो। कहते हो ना स्वर्ग देखना हो तो अभी देखो। वहाँ स्वर्ग का वर्णन नहीं करेंगे। अभी फलक से कहते हो कि हमने स्वर्ग देखा है। चैलेन्ज करते हो कि स्वर्ग देखना हो तो यहाँ आकर देखो। ऐसे वर्णन करते हैं ना। पहले सोचते थे, सुनते थे कि स्वर्ग की परियाँ बहुत सुन्दर होती हैं। लेकिन किसने देखा नहीं। स्वर्ग में यह यह होता, सुना बहुत लेकिन अब स्वयं स्वर्ग के संसार में पहुँच गये। खुद ही स्वर्ग की परियाँ बन गये। श्याम से सुन्दर बन गये ना! पंख मिल गये ना। इतने न्यारे पंख ज्ञान और योग के मिले हौ जिससे तीनों ही लोकों का चक्र लगा सकते हो। साइंस वालों के पास भी ऐसे तीव्रगति का साधन नहीं है। सभी को पंख मिले हैं? कोई रह तो नहीं गया है। इस संसार का ही गायन है – अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के संसार में। इसलिए गायन है एक बाप मिला तो सब कुछ मिला। एक दुनिया नहीं लेकिन तीनों लोकों का मालिक बन जाते। इस संसार का गायन है सदा सभी झूलों में झूलते रहते। झूलों में झूलना भाग्य की निशानी कहा जाता है। इस संसार की विशेषता क्या है? कभी अतीन्द्रिय सुख के झूलों के झूलते, कभी खुशी के झूले में झूलते, कभी शान्ति के झूले में, कभी ज्ञान के झूले में झूलते। परमात्म गोदी के झूले में झूलते। परमात्म गोदी है याद की लवलीन अवस्था में झूलना। जैसे गोदी में समा जाते हैं। ऐसे परमात्म याद में समा जाते, लवलीन हो जाते। यह अलौकिक गोद सेकण्ड में अनेक जन्मों के दु:ख दर्द भूला देती है। ऐसे सभी झूलों में झूलते रहते हो!

कभी स्वप्न में भी सोचा था कि ऐसे संसार के अधिकारी बन जायेंगे! बापदादा आज अपने प्यारे संसार को देख रहे हैं। यह संसार पसन्द है? प्यारा लगता है? कभी एक पाँव उस संसार में, एक पाँव इस संसार में तो नहीं रखते? ६३ जन्म उस संसार को देख लिया, अनुभव कर लिया। क्या मिला? कुछ मिला वा गँवाया? तन भी गँवाया, मन का सुख-शान्ति गँवाया और धन भी गँवाया! सम्बन्ध भी गँवाया। जो बाप ने सुन्दर तन दिया, वह कहाँ गँवाया! अगर धन भी इकट्ठा करते हैं तो काला धन। स्वच्छ धन कहाँ गया? अगर है भी तो काम का नहीं है। कहने में करोड़पति हौ लेकिन दिखा सकते हैं? तो सब कुछ गँवाया फिर भी अगर बुद्धि जाए तो क्या कहेंगे! समझादार? इसलिए अपने इस श्रेष्ठ संसार को सदा स्मृति में रखो। इस संसार के इस जीवन की विशेषताओं को सदा स्मृति में रख समर्थ बनो। स्मृति स्वरुप बनो तो नष्टोमोहा स्वत: ही बन जायेंगे। पुरानी दुनिया की कोई भी चीज बुद्धि से स्वीकार नहीं करो। स्वीकार किया अर्थात् धोखा खाया। धोखा खाना अर्थात् दु:ख उठाना। तो कहाँ रहना है? श्रेष्ठ संसार में या पुराने संसार में? सदा अन्तर स्पष्ट इमर्ज रुप में रखा कि वह क्या और यह क्या! अच्छा–

ऐसे छोटे से प्यारे संसार में रहने वाली विशेष ब्राह्मण आत्माओं को सदा तख्तनशीन आत्माओं को सदा झूलों में झूलने वाली आत्माओं को, सदा न्यारे और परमात्म प्यारे बच्चों को परमात्म याद परमात्म प्यार और नमस्ते।

सेवाधारी (टीचर्स) बहिनों से:- सेवाधारी अर्थात् त्यागी तपस्वी आत्मायें। सेवा का फल तो सदा मिलता ही है लेकिन त्याग और तपस्या से सदा ही आगे बढ़ती रहेंगी। सदा अपने को विशेष आत्मायें समझ कर विशेष सेवा का सबूत देना है। यही लक्ष्य रखो जितना लक्ष्य मजबूत होगा उतनी बिल्डिंग भी अच्छी बनेगी। तो सदा सेवाधारी समझ आगे बढ़ो। जैसे बाप ने आपको चुना वैसे आप फिर प्रजा को चुना। स्वयं सदा निर्विघ्न बन सेवा को भी निर्विघ्न बनानते चलो। सेवा तो सभी करते हैं लेकिन निर्विघ्न सेवा हो, इसी में नम्बर मिलते हैं। जहाँ भी रहते हो वहाँ हर स्टूडेन्ट निर्विघ्न हो, विघ्नों की लहर न हो। शक्तिशाली वातावरण हो। इसको कहते हैं निर्विघ्न आत्मा। यही लक्ष्य रखो – ऐसा याद वातावरण हो जो विघ्न आ न सके। किला होता है तो दुश्मन आ नहीं सकता। तो निर्विघ्न बन निर्विघ्न सेवाधारी बनो। अच्छ्ज्ञ!

विश्व के राजनेताओं के प्रति अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश

विश्व की हर एक राज्य नेता अपने देश को वा देशवासियों को प्रगति की ओर ले जाने की शुभ भावना, शुभ कामना से अपने-अपने कार्य में लगे हुए हैं। लेकिन भावना बहुत श्रेष्ठ हैं, प्रत्यक्ष प्रमाण जितना चाहते हैं उतना नहीं होता – यह क्यों? क्योंकि आज की जनता वा बहुत से नेताओं के मन की भावनायें सेवा भाव, प्रेम भाव के बजाए स्वार्थ भाव, ईर्ष्या भाव में बदल गई है। इसलिए इस फाउन्डेशन को समाप्त करने के लिए प्राकृतिक शक्ति, वैज्ञानिक शक्ति, वर्ल्डली नालेज की शक्ति राज्य के अथार्टी की शक्ति द्वारा तो अपने प्रयत्न किये हैं लेकिन वास्तविक साधन स्प्रीचुअल पावर है, जिससे ही मन की भावना सहज बदल सकती है, उस तरफ अटेन्शन कम है। इसलिए बदली हुई भावनाओं का बीज नहीं समाप्त होता। थोड़े समय के लिए दब जाता है। लेकिन समय प्रमाण और ही उग्र रुप में प्रत्यक्ष हो जाता है। इसलिए स्प्रीचुअल बाप का स्प्रीचुअल बच्चों आत्माओं प्रति सन्देश है कि सदा अपने को स्प्रिट (सोल) समझ स्प्रीचुअल बाप से सम्बन्ध जोड़ स्प्रीचुअल शक्ति ले अपने मन के नेता बनो तब राज्य नेता बन औरों के भी मन की भावनाओं को बदल सकेंगे। आपके मन का संकल्प और जनकता का प्रैक्टिकल कर्म एक हो जायेगा। दोनों के

सहयोग से सफलता का प्रत्यक्ष प्रमाण अनुभव होगा। याद रहे कि सेल्फ रूल अधिकारी ही सदा योग्य राजनेता के रूल अधिकारी बन सकते हैं। और स्वराज्य आपका स्प्रीचुअल फादरली बर्थ राइट है। इस बर्थ राइट की शक्ति से सदा राइटियस की शक्ति भी अनुभव करेंगे और सफल रहेंगे।

25-11-85

निश्चय बुद्धि विजयी रत्न की निशानियाँ

सर्व के सहारे रहमदिल बापदादा बोले:-

आज बापदादा अपने निश्चय बुद्धि विजयी रत्नों की माला को देख रहे थे। सभी बच्चे अपने को समझते हैं कि मैं निश्चय में पक्का हूँ। ऐसा कोई विरला होगा जो अपने को निश्चयबुद्धि नहीं मानता हो। किसी से भी पूछेंगे निश्चय है? तो यही कहेंगे कि निश्चय न होता तो ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी कैसे बनते। निश्चय के प्रश्न पर सब हाँ कहते हैं। सभी निश्चयबुद्धि बैठे हैं, ऐसे कहेंगे नए? नहीं तो जो समझते हैं कि निश्चय हो रहा है वह हाथ उठावें। सब निश्चयबुद्धि हैं। अच्छा जब सभी को पक्का निश्चय है फिर वहजय माला में नम्बर क्यों हैं? निश्चय में सभी का एक ही उत्तर है ना! फिर नम्बर क्यों? कहाँ अक्ष्ट रतन, कहाँ १०० रतन और कहाँ १६ हजार! इसका कारण क्या? अष्ट देव का पूजन गायान और १६ हजार की माला का गायन और पूजन में कितना अन्तर है? बाप एक है और एक के ही हैं यह निश्चय है फिर अन्तर क्यों? निश्चयबुद्धि में परसेन्टेज होती है क्या? निश्चय में अगर परसेन्टेज हो तो उसको निश्चय कहेंगे? ८ रतन भी निश्चय बुद्धि, १६ हजार वाले भी निश्चयबुद्धि कहेंगे ना!

निश्चयबुद्धि की निशानी विजय है। इसलिए गायन है निश्चयबुद्धि विजयन्ती। तो निश्चय अर्थात् विजयी हैं ही हैं। कभी विजय हो, कभी न हो। यह हो नहीं सकता। सरकमस्टांस भले कैसे भी हों लेकिन निश्चयबुद्धि बच्चे सरकमस्टांस में अपनी स्वस्थिति की शक्ति सदा विजय अनुभव करेंगे जो विजयी रतन अर्थात् विजय माला का मणका बन गया, गले का हार बन गया उसकी माया से हार कभी हो नहीं सकती। चाहे दुनिया वाले लोग वा ब्राह्मण परिवार के सम्बन्ध सम्पर्क में दूसरा समझे वा कहें कि यह हार गया – लेकिन वह हार नहीं है, जीत है। क्योंकि कहाँ-कहाँ देखने वा करने वालों कि मिस अन्डरस्टैन्डिंग भी हो जाती है। नम्रचित, निर्माण वा हाँ जी का पाठ पढ़ने वाली आत्मों के प्रति कभी मिसअन्डरस्टैन्डिंग से उसकी हार सकते हैं, दूसरों को रूप हार का दिखाई देता है लेकिन वास्तविक विजय है। सिर्फ उस समय दूसरों के कहने वा वायुमण्डल में स्वयं निश्चयबुद्धि से बदल शक्य का रूप न बने। पता नहीं हार है या जीत है। यह शक्य न रख अपने निश्चय में पक्का रहे। तो जिसको आज दूसरे लोग हार कहते हैं, कल वाह वाह के पुषप चढ़ायेंगे।

विजयी आत्मा को अपने मन में, अपने कर्म प्रति कभी दुविधा नहीं होगी। राइट हूँ वा रांग हूँ। दूसरे का कहना अलग चीज है। दूसरे कोई राइट कहेंगे कोई रांग कहेंगे लेकिन अपना मन निश्चयबुद्धि हो कि मैं विजयी हूँ। बाप में निश्चय के साथ-साथ स्वयं का भी निश्चय चाहिए। निश्चयबुद्धि अर्थात् विजयी का मन अर्थात् संकल्प शक्ति सदा स्वच्छ होने के कारण हॉ और ना का स्वयं प्रति वा दूसरों के प्रति निर्णय सहज और सत्य, स्पष्ट होगा। इसलिए पता नहीं की दुविधा नहीं होगी। निश्चयबुद्धि विजयी रत्न की निशानी – सत्य निर्णय होने के कारण मन में जरा भी मूँझ नहीं होगी। सदैव मौज होगी। खुशी की लहर होगी। चाहे सरकमस्टांस आग के समान हो लेकिन उसके लिए वह अग्नि-परीक्षा विजय की खुशी अनुभव करायेगी। क्योंकि परीक्षा में विजयी हो जायेंगे ना। अब भी लौकिक रीति किसी भी बात में विजय होती है तो खुशी मनाने के लिए हँसते नाचते ताली बजाते हैं। यह खुशी की निशानी है। निश्चयबुद्धि कभी भी किसी भी कार्य में अपने को अकेला अनुभव नहीं करेंगे। सभी एक तरफ हो मैं अकेला दूसरी तरफ हूँ, चाहे मैजारिटी दूसरे तरफ हों और विजयी रत्न सिर्फ एक हो फिर भी वह अपने को एक नहीं लेकिन बाप मेरे साथ है इसलिए बाप के आगे अक्षोणी भी कुछ नहीं है। जहाँ बाप है वहाँ सारा संसार बाप में है। बहज है तो झाड़ उसमें है ही। विजयी निश्चयबुद्धि आत्मा सदा अपने को सहारे के नीचे समझेंगे। सहारा देने वाला दाता मेरे साथ है यह नैचुरल अनुभव करता है। ऐसे नहीं कि जब समस्या आवे उस समय बाप के आगे भी कहेंगे बाबा आप तो मेरे साथ हो ना। आप ही मददगार हो ना। बस अब आप ही हो। मतलब का सहारा नहीं लेंगे। आप हो ना, यह हो ना का अर्थ क्या हुआ? निश्चय हुआ? बाप को भी याद दिलाते हैं कि आप सहारा हो। निश्चयबुद्धि कभी भी ऐसा संकल्प नहीं कर सकते। उनके मन में जरा भी बेसहारे वा अकेलेपन का संकल्प मात्र भी अनुभव नहीं होगा। निश्चयबुद्धि विजयी होने के कारण सदा खुशी में नाचता रहेगा। कभी उदासी वा अल्पकाल का हद का वैराग, इसी लहर में भी नहीं आयेंगे। कई बार जब माया का तेज वार होता है, अल्पकाल का वैराग भी आता है लेकिन वह हद का अल्पकाल का वैराग होता है। बेहद का सदा का नहीं होता। मजबूरी से वैराग वृत्ति उत्पन्न होती है। इसलिए उस समय कह देते हैं कि इससे तो इसको छोड़ दें। मुझे वैराग आ गया है। सेवा भी छोड़ दें यह भी छोड़ दें। वैराग आता है लेकिन वह बेहद का नहीं होता। विजयी रतन सदा हार में भी जीत, जीत में भी जीत अनुभव करेंगे। हद के वैराग को कहते हैं किनारा करना। नाम वैराग कहते लेकिन होता किनारा है। तो

विजयी रतन किसी कार्य से, समस्या से, व्यक्ति से किनारा नहीं करेंगे। लेकिन सब कर्म करते हए, सामना करते हुए, सहयोगी बनते हुए बेहद के वैरागवृत्ति में होंगे। जो सदाकाल का है। निश्चयबुद्धि विजयी कभी अपने विजय का वर्णन नहीं करेंगे। दूसरे को उल्हना नहीं देंगे। देखा मैं राइट था ना। यह उल्हना देना या वर्णन करना यह खालीपन की निशानी है। खाली चीज ज्यादा उछलती है ना। जितना भरपूर होंगे उतना उछलेंगे नहीं। वियजी सदा दूसरे की भी हिम्मत बढ़ायेगा। नीचा दिखाने की कोशिश नहीं करेगा। क्योंकि विजयी रतन बाप समान मास्टर सहारे दाता है। नीचे से ऊंचा उठाने वाला है। निश्चयबुद्धि व्यर्थ से सदा दूर रहता है। चाहे व्यर्थ संकल्प हो, बोल हो वा कर्म हो। व्यर्थ से किनारा अर्थात् विजयी है। व्यर्थ के कारण ही कभी हार कभी जीत होती है। व्यर्थ समाप्त हो तो हार समाप्त। व्यर्थ समाप्त होना यह विजयी रत्न की निशानी है। अब यह चैक करो कि निश्चयबुद्धि विजयी रत्न की निशानियाँ अनुभव होती हैं? सुनाया ना – निश्चयबुद्धि तो हैं, सच बोलते हैं। लेकिन निश्चयबुद्धि एक हैं जानने तक, मानने तक और एक हैं चलने तक। मानते तो सभी हो कि हाँ भगवान मिल गया। भगवान के बन गये। मानना वा जानना एक ही बात है। लेकिन चलने में नम्बरवार हो जाते। तो जानते भी हैं, मानते भी इसमें ठीक हैं लेकिन तीसरी स्टेज है मान कर, जानकर चलना। हर कदम में निश्चय की वा विजय की प्रत्यक्ष निशानियाँ दिखाई दें। इसमें अन्तर है इसलिए नम्बरवार बन गये। समझा। नम्बर क्यों बनें हैं।
इसी को ही कहा जाता है नष्टोमोहा। नष्टोमोहा की परिभाषा बड़ी गुह्य है। वह फिर कब सुनायेंगे। निश्चयबुद्धि नष्टोमोहा की सीढ़ी है। अच्छा– आज दूसरा ग्रुप आया है। घर के बालक ही मालिक हैं तो घर के मालिक अपने घर में आये हैं ऐसे कहेंगे ना। घर में आये हो घर से आये हो? अगर उसको घर समझेंगे तो ममत्व जायेगा। लेकिन वह ट्रैम्प्रेरी सेवा स्थान है। घर तो सभी का मधुबन है ना। आत्मा के नाते परमधाम है। ब्राह्मण के नाते मधुबन है। जब कहते ही हो कि हेड आफिस माउण्ट आबू है तो जहॉ रहते हो वह क्या हुई? आफिस हुई ना। तब तो हेड आफिस कहते। तो घर से आये नहीं हो लेकिन घर में आये हो। आफिस से कभी भी किसको चेन्ज कर सकते हैं। घर से निकाल नहीं सकते। आफिस तो बदली कर सकते। घर समझेंगे तो मेरापन रहेगा। सेन्टर को भी घर बना देते। तब मेरापन आता है। सेन्टर समझें तो मेरापन नहीं रहे। घर बन जाता, आराम का स्थान बन जाता तब मेरापन रहता है। तो अपने घर से आये हो। यह जो कहावत है अपना घर दाता का दर। यह कौन से स्थान के लिए है? वास्तविक दाता का दर अपना घर तो मधुबन है ना। अपने घर में अर्थात् दाता के घर में आये हो। घर अथवा दर कहो बात एक ही है। अपने घर में अपने से आराम मिलता है ना। मन का आराम। तन का भी आराम, धन का भी आराम। कमाने के लिए जाना थोड़े ही पड़ता। खाना बनाओ तब खाओ इससे भी आराम मिली जाता, थाली में बना बनाया भोजन मिलता है। यहाँ तो ठाकुर बन जाते हो। जैसे ठाकुरों के मंदिर में घण्टी बजाते हौ ना। ठाकुर को उठाना होगा, सुलाना होगा तो घण्टी बजाते। भोग लगायेंगे तो भी घण्टी बजायेंगे। आपकी भी घण्टी बजती है ना। आजकल फैशनबुल हैं तो रिकार्ड बजता है। रिकार्ड से सोते हो, फिर रिकार्ड से उठते हो तो ठाकुर हो गये ना। यहाँ का ही फिर भक्तिमार्ग में कापी करते हैं। यहाँ भी ३-४ बार भोग लगता है। चैतन्य ठाकुरों को ४ बजे से भोग लगाना शुरु हो जाता है। अमृतवेले से भोग शुरू होता। चैतन्य स्वरुप में भगवान सेवा कर रहा है बच्चों की। भगवान की सेवा तो सब करते हैं यहाँ भगवान सेवा करता। किसकी? चैतन्य ठाकुरों की। यह निश्च सदा ही खुशी में झुलाता रहेगा। समझझ। सभी जोन लाडले हैं। जब जो जोन आता है वह लाडला है। लाडले तो हो लेकिनि सिर्फ बाप के लाडले बनो। माया के लाडले नहीं बन जाओ। माया के लाडले बनते हो तो फिर बहुत लाड कोड करते हो। जो भी आये हैं भाग्यवान आये हो भगवान के पास। अच्छा–
सदा हर संकल्प में निश्चयबुद्धि विजयी रत्न सदा भगवान और भाग्य के स्मृति स्वरुप आत्माओं को, सदा हार और जीत दोनों में विजय अनुभव करने वालों को, सदा सहारा अर्थात् सहयोग देने वाले मास्टर सहारे दाता आत्माओं को, सदा स्वयं को बाप के साथ अनुभव करने वाली श्रेष्ट आत्मओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पार्टियों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

१. सभी एक लगन में मगन रहने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो? साधारण तो नहीं। सदा श्रेष्ठ आत्मयें जो भी कर्म करेंगी वह श्रेष्ठ होगा। जब जन्म ही श्रेष्ठ है तो कर्म साधारण कैसे होगा। जब जन्म बदलता है तो कर्म भी बदलता है। नाम रुप देश, कर्म सब बदल जाता है। तो सदा नया जन्म, नये जन्म की नवीनता के उमंग उत्साह में रहते हो। जो कभी-कभी रहने वाले हैं उन्हें राज्य भी कभी-कभी मिलेगा।

जो निमित्त बनी हुई आत्मायें हैं उन्हें निमित्त बनने का फल मिलता रहता है। और फल खाने वाली आत्मायें शक्तिशाली होती हैं। यह प्रत्यक्षफल है, श्रेष्ठ युग का फल है। इसका फल खाने वाले सदा शक्तिशाली होंगे। ऐसे शक्तिशाली आत्मायें परिस्थितियों के ऊपर सहज ही विजय पा लेती हैं। परिस्थिति नीचे और वह ऊपर। जैसे श्रीकृष्ण के लिए दिखाते हैं कि उसने सांप को भी जीता। उसके सिर पर पांव रखकर नाचा। तो यह आपका चित्र है। कितने भी जहरीले साँप हों लेकिन आप उन पर भी विजय प्राप्त कर नाच करने वाले हो। यही श्रेष्ठ शक्तिशाली स्मृति सबको समर्थ बना देगी। और जहाँ समर्थता है वहाँ व्यर्थ समाप्त हो जाता है। समर्थ बाप के साथ हैं, इसी स्मृति के वरदान से सदा आगे बढ़ते चलो।

२. सभी अमर बाप की अमर आत्मायें हो ना। अमर हो गई ना? शरीर छोड़ते हो तो भी अमर हो क्यों? क्योंकि भाग्य बना करके जाते हो। हाथ खाली नहीं जाते। इसलिए मरना नहीं है। भरपूर होकर जाना है। मरना अर्थात् हाथ खाली जाना। भरपूर होकर जाना माना चोला बदली करना। तो अमर हो गये ना। अमर भाव का वरदान मिल गया। इसमें मृत्यु के वशीभूत नहीं होते। जानते हो जाना भी है फिर आना भी है। इसलिए अमर हैं। अमरकथा सुनते-सुनते अमर बन गये। रोज-रोज प्यार से कथा सुनते हो ना। बाप अमरकथा सुनाकर अमरभव का वरदान दे देता है। बस सदा इसी खुशी में रहो कि अमर बन गये। मालामाल बन गये। खाली थे भरपूर हो गये। ऐसे भरपूर हो गये जो अनेक जन्म खाली नहीं हो सकते।

३. सभी याद की यात्रा में आगे बढ़ते जा रहे हो ना। यह रुहानी यात्रा सदा ही सुखदाई अनुभव करायेगी। इस यात्रा से सदा के लिए सर्व यात्रायें पूर्ण हो जाती हैं। रुहानी यात्रा की तो सभी यात्रायें हो गई और कोई यात्रा करने की आवश्यकता ही नहीं रहती। क्योंकि महान यात्रा है ना। महान यात्रा में सब यात्रायें समाई हुई है। पहले यात्राओं में भटकते थे अभी इस रुहानी यात्रा से ठिकाने पर पहुँच गये। अभी मन को भी ठिकाना मिला तो तन को भी ठिकाना मिला। एक ही यात्रा से अनेक प्रकार का भटकना बन्द हो गया। तो सदा रुहानी यात्री हैं इस स्मृति में रहो, इससे सदा उपराम रहेंगे, न्यारे रहेंगे, निर्मोही रहेंगे। किसी में भी मोह नहीं जायेगा। यात्री का किसी में भी मोह नहीं जाता। ऐसी स्थिति सदा रहे। (विदाई के समय) – बापदादा सभी देश-विदेश के बच्चों को देख खुश होते हैं क्योंकि सभी सहयोगी बच्चे हैं। सहयोगी बच्चों को बापदादा सदा दिलतख्तनशीन समझ याद कर रहे हैं। सभी निश्चयबुद्धि आत्मायें बाप की प्यारी हैं। क्योंकि सभी गले का हार बन गई। अच्छा – सभी बच्चे सर्विस अच्छी वृद्धि को प्राप्त करा रहे हैं। अच्छा सभी को याद – ओम् शान्ति।

27-11-85

पुराना संसार और पुराना संस्कार भुलाने का उपाय

सर्वशक्तिमान शिवबाबा बोले

बापदादा सभी निश्चयबुद्धि बच्चों के निश्चय का प्रत्यक्ष जीवन का स्वरुप देख रहे हैं। निश्चयबुद्धि की विशेषतायें सभी ने सुनीं। ऐसा विशेषताओं सम्पन्न निश्चयबुद्धि विजयी रतन इस ब्राह्मण जीवन वा पुरुषोत्तम संगमयुगी जीवन में सदा निश्चय का प्रमाण, नशे में होगा। रुहानी नशा निश्चय का दर्पण स्वरुप है। निश्चय सिर्फ बुद्धि में स्मृति तक नहीं लेकिन हर कदम में रुहानी नशे के रूप में, कर्म द्वारा प्रत्यक्ष स्वरूप में स्वयं को भी अनुभव होता औरों को भी अनुभव होता क्योंकि यह ज्ञान और योज जीवन है। सिर्फ सुनने सुनाने तक नहीं है, जीवन बनाने का है। जीवन में स्मृति अर्थात् संकल्प, बोल, कर्म सम्बन्ध सब आ जाता है। निश्चयबुद्धि अर्थात् नशे का जीवन। ऐसे रुहानी नशे वाली आत्मा का हर संकल्प सदा नशे से सम्पन्न् होगा। संकल्प, बोल, कर्म तीनों से निश्चय का नशा अनुभव होगा। जैसा नशा वैसे खुशी की झलक चेहरे से चलन से प्रत्यक्ष होगी। निश्चय का प्रमाण नशा और नशे का प्रमाण है खुशी। नशे कितने प्रकार के हैं इसका विस्तार बहुत बड़ा है। लेकिन सार रूप में एक नशा है अशरीरी आत्मिक स्वरुप का। इसका विस्तार जानते हो? आत्मा तो सभी हैं लेकिन रुहानी नशा तब अनुभव होता जब यह स्मृति में रखते कि मैं कौन-सी आत्मा हूँ? इसका और विस्तार आपस में निकालना वा स्वयं मनन करना।

दूसरा नशे का विशेष रूप संगमयुग का अलौकिक जीवन है। इस जीवन में भी कौन-सी जीवन है इसका भी विस्तार सोचो। तो एक है आत्मिक स्वरुप का नशा। दूसरा है अलौकिक जीवन का नशा। तीसरा है फरिश्तेपन का नशा। फरिश्ता किसको कहा जाता है इसका भी विस्तार करो। चौथा है भविष्य का नशा। इन चार ही प्रकार के अलौकिक नशे में से कोई भी नशा जीवन में होगा तो स्वत: ही खुशी में नाचते रहेंगे। निश्चय भी है लेकिन खुशी नहीं है इसका कारण? नशा नहीं है। नशा सहज ही पुराना संसार और पुराना संस्कार भुला देता है। इस पुरुषार्थी जीवन में विशेष विघ्न रुप यह दो बातें हैं। चाहे पुराना संसार वा पुराना संस्कार। संसार में देह के सम्बन्ध और देह के पदार्थ दोनों आ जाता है। साथ-साथ संसार से भी पुराने संस्कार ज्यादा विघ्न रूप बनते हैं। संसार भूल जाते हैं लेकिन संस्कार नहीं भूलते। तो संस्कार परिवर्तन करने का साधन है इन चार के नशे में से कोई भी नशा साकार स्वरूप में हो। सिर्फ संकल्प स्वरुप में नहीं। साकार स्वरुप में होने से कभी भी विघ्न रूप नहीं बनेंगे। अभी तक संस्कार परिवर्तन न होने का कारण यह है। इन नशों को संकल्प रूप में अर्थात् नालेज के रूप में बुद्धि तक धारण किया है। इसलिए कभी भी किसी का पुराना संस्कार इमर्ज होता है तब यह भाषा बोलते हैं। मैं सब समझती हूँ, बदलना है यह भी समझते हैं लेकिन समझ तक नहीं। कर्म अर्थात् जीवन तक चाहिए। जीवन द्वारा परिवर्तन अनुभव में आवे। इसको कहा जाता है साकार स्वरूप में आना। अभी बुद्धि तक पाइंटस के रूप में सोचने और वर्णन करने तक है। लेकिन हर कर्म में, सम्पर्क में परिवर्तन दिखाई दे इसको कहा जाता है साकार रूप में अलौकिक नशा। अभी हर एक नशे को जीवन में लाओ। कोई भी आपके मस्तक तरफ देखे तो मस्मक द्वारा रुहानी नशे की वृत्ति अनुभव हो। चाहे कोई वर्णन करे न करे लेकिन वृत्ति, वायुमण्डल और वायब्रेशन फैलाती है। आपकी वृत्ति दूसरे को भी खुशी के वायुमण्डल में खुशी के वायब्रेशन अनुभव करावे। इसको कहा जाता है नशे में स्थित होना। ऐसे ही दृष्टि से, मुख की

मुस्कान से, मुख के बोले से, रुहानी नशे का साकार रूप अनुभव हो। तब कहेंगे नशे में रहने वाले निश्चयबुद्धि विजयी रतन। इसमें गुप्त नहीं रहना है। कई ऐसी भी चतुराई करते हैं कि हम गुप्त हैं। जैसे कहावत है सूर्य को कभी कोई छिपा नहीं सकता। कितने भी गहरे बादल हों फिर भी सूर्य अपना प्रकाश छोड़ नहीं सकता। सूर्य हटता है वा बादल हटते हैं? बादल आते भी हैं और हट भी जाते हैं लेकिन सूर्य अपने प्रकाश स्वरुप में स्थित रहता है। तो रुहानी नशे वाला भी रुहानी झलक से छिप नहीं सकता। उसके रुहानी नशे की झलक प्रत्यक्ष रुप में अनुभव अवश्य होती है। उनके वायब्रेशन स्वत: ही औरों को आकर्षित करते हैं। रुहानी नशे में रहने वाले के वायब्रेशन स्वयं के प्रति वा औरों के प्रति छत्रछाया का कार्य करते हैं। तो अभी क्या करना है? साकार में आओ। नालेज के हिसाब से नालेजफुल हो गये हो। लेकिन नालेज को साकार जीवन में लाने से नालेजफुल के साथ-साथ सक्सेसफुल, ब्लिसफुल अनुभव करेंगे। अच्छा फिर सुनायेंगे सक्सेसफुल और ब्लिसफुल का स्वरुप क्या होता है?

आज तो रुहानी नशे की बात सुना रहे हैं। सभी को नशा अनुभव हो। इन चार ही नशों में से एक नशे को भिन्न-भिन्न रूप से यूज करो। जितना इस नशे को जीवन में अनुभव करेंगे तो सदा सभी फिकर से फारिग बेफिकर बादशाह बन जायेंगे। सभी आपको बेफिकर बादशाह के रूप में देखेंगे। जब विस्तार निकालना वा प्रैक्टिस में लाना। जहाँ खुशी है वहाँ माया की कोई भी चाल चल नहीं सकती। बेफिकर बादशाह की बादशाही के अन्दर माया आ नहीं सकती। आती है और भगाते हो, फिर आती है फिर भगाते हो। कभी देह के रूप में आती, कभी देह के सम्बन्ध के रूप में आती है। इसी को ही कहते हैं कभी महारथी हाथी बनके आती कभी बिल्ली बनके आती, कभी चूहा बनकर आती। कभी चूहे को निकलाते, कभी बिल्ली को निकालते। इसी भगाने के कार्य में समय निकल जाता है। इसलिए सदा रूहानी नशे में रहो। पहले स्वयं को प्रत्यक्ष करो तब बाप की प्रत्यक्षता करेंगे। क्योंकि आप द्वारा बाप प्रत्यक्ष होना है। अच्छा–

सदा स्वयं द्वारा सर्व शक्तिवान को प्रत्यक्ष करने वाले, सदा अपने साकार जीवन के दर्पण से रुहानी नशे की विशेषता प्रत्यक्ष करने वाले, सदा बेफिकर बादशाह बन माया को विदाई देने वाले, सदा नालेज को स्वरूप में लाने वाले, ऐसे निश्चय बुद्धि नशे में रहने वाले, सदा खुशी में झूलने वाले, ऐसी श्रेष्ठ आत्माओं को, विशेष आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

सेवाधारी (टीचर्स) बहिनों से:- सेवाधारी अर्थात् अपनी शक्तियों द्वारा औरों को भी शक्तिशाली बनाने वाले। सेवाधारी की विशेषता यही है। निर्बल में बल भरने के निमित्त् बनना, यही सच्ची सेवा है। ऐसी सेवा का पार्ट मिलना भी हीरो पार्ट है। तो हीरो पार्टधारी कितने नशे में रहती हो? सेवा के पार्ट से जितना अपने को नम्बर आगे बढ़ाने चाहो बढ़ा सकती हो। क्योंकि सेवा आगे बढ़ने का साधन है। सेवा में बिजी रहने से स्वत: ही सब बातों से किनारा हो जाता है। हर एक सेवा स्थान स्टेज है, जिस स्टेज पर हर आत्मा अपना पार्ट बजा रही है। साधन तो बहुत हैं लेकिन सदा साधनों में शक्ति होनी चाहिए। अगर बिना शक्ति के साधन यूज करते हैं तो जो सेवा की रिजल्ट निकलनी चाहिए वह नहीं निकलती है। पुराने समय में जो वीर लोग होते थे वह सदैव अपने शस्त्रों को देवताओं के आगे अर्पण कर उसमें शक्ति भरकर फिर यूज करते थे। तो आप सभी भी कोई भी साधन जब यूज करते हो तो उसे यूज करने के पहले उसी विधिपूर्वक कार्य में लगाते हो? अभी जो भी साधन कार्य में लगाते हो उससे थोड़े समय के लिए लोग आकर्षित होते हैं। सदाकाल के लिए प्रभावित नहीं होते। क्योंकि इतनी शक्तिशाली आत्मायें जो शक्ति द्वारा परिवर्तन कर दिखायें, वह नम्बरवार हैं। सेवा तो सभी करते हो, सभी का नाम है टीचर्स। सेवाधारी हो या टीचर हो लेकिन सेवा में अन्तर क्या है? प्रोग्राम भी एक ही बनाते हो, प्लैन भी एक जैसा करते हो। रीति रसम भी एक जैसी बनती है फिर भी सफलता में अन्तर पड़ जाता है, उसका कारण क्या? शक्ति की कमी। तो साधन में शक्ति भरी। जैसे तलवार में अगर जौहर नहीं हो तो तलवार, तलवार का काम नहीं देती। ऐसे साधन हैं तलवार लेकिन उसमें शक्ति का जौहर चाहिए। वह जितना अपने में भरते जायेंगे उतना सेवा में स्वत: ही सफलता मिलेगी। तो शक्तिशाली सेवाधारी बनो। सदा विधि द्वारा वृद्धि को प्राप्त होना यह भी कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन शक्तिशाली आत्मायें वृद्धि को प्राप्त हों – इसका विशेष अटेन्शन। क्वालिटी निकालो। क्वान्टिटी तो और भी ज्यादा आयेगी। क्वालिटी के ऊपर अटेन्शन। नम्बर क्वालिटी पर मिलेगा। क्वान्टिटी पर नहीं। एक क्वालिटी वाला १०० क्वान्टिटी के बाराबर है।

कुमारो से:- कुमार क्या कमाल करते हो? धमाल करने वाले तो नहीं हो ना! कमाल करने के लिए शक्तिशाली बनो और बनाओ। शक्तिशाली बनने के लिए सदा अपना मास्टर सर्व शक्तिवान का टाइटिल स्मृति में रखो। जहाँ शक्ति होगी वहाँ माया से मुक्ति होगी। जितना स्व के ऊपर अटेन्शन होगा उतना ही सेवा में भी अटेन्शन जायेगा। अगर स्व के प्रति अटेन्शन नहीं तो सेवा में शक्ति नहीं भरती। इसलिए सदा अपने को सफलता स्वरुप बनाने के लिए शक्तिशाली अभ्यास के साधन बनाने चाहिए। कोई ऐसे विशेष प्रोग्राम बनाओ। जिससे सदा प्रोग्रेस होती रहे। पहले स्व उन्नति के प्रोग्राम तब सेवा सहज और सफल होगी। कुमार जीवन भाग्यवान जीवन है क्योंकि कई बन्धनों से बच गये। नहीं तो गृहस्थी जीवन में कितने बन्धन हैं। तो ऐसे भाग्यवान बनने वाली आत्मायें कभी पअने भाग्य को भूल तो नहीं जातीं। सदा अपने को श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा समझ औरों के भी भाग्य की रेखा खींचने वाले हो। जो निर्बन्धन होते हैं वह सब ही उड़ती कला द्वारा आगे बढ़ते जाते। इसलिए कुमार और कुमारी जीवन बापदादा को सदा प्यारी

लगती है। गृहस्थी जीवन है बन्धन वाली और कुमारी जीवन है बन्धन मुक्त। तो निर्बन्धन आत्मा बन औरों को भी निर्बन्धन बनाओ। कुमार अर्थात् सदा सेवा और याद का बैलेन्स रखने वाले। बैलेन्स है तो सदा उड़ती कला है। जो बैलेन्स रखना जानते हैं वह कभी भी किसी परिस्थिति में नीचे-ऊपर नहीं हो सकते।

अधर कुमारों से:- सभी अपने को जीवन के प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा सेवा करने वाले हो ना! सबसे बड़े ते बड़ा प्रत्यक्ष प्रमाण है। आप सबकी जीवन का परिवर्तन। सुनने वाले सुनाने वाले तो बहुत देखे। अभी सब देखने चाहते हैं, सुनने नहीं चाहते। तो सदा जब भी कोई कर्म करते हो तो यह लक्ष्य रखो कि जो कर्म हम कर रहे हैं उसमें ऐसा परिवर्तन हो जो दूसरे देख करके परिवर्तित हो जाएं। इससे स्वयं भी सन्तुष्ट और खुश रहेंगे और दूसरों का भी कल्याण करेंगे। तो हर कर्म सेवार्थ करो। अगर यह स्मृति रहेगी कि मेरा हर कर्म सेवा अर्थ है तो स्वत: ही श्रेष्ठ कर्म करेंगे। याद रखो – स्व परिवर्तन से औरों का परिवर्तन करना है। यह सेवा सहज भी है और श्रेष्ठ भी है। मुख का भी भाषण और जीवन का भी भाषण। इसको कहते हैं सेवाधारी। सदा अपनी दृष्टि द्वारा औरों की दृष्टि बदलने के सेवाधारी। जितनी दृष्टि शक्तिशाली होगी उतना अनेकों का परिवर्तन कर सकेंगे। सदा दृष्टि और श्रेष्ठ कर्म द्वारा औरों की सेवा करने के निमित्त बनो।

२. क्या थे और क्या बन गये! यह सदा स्मृति में रखते हो! इस स्मृति में रहने से कभी भी पुराने संस्कार इमर्ज नहीं हो सकते। साथ-साथ भविष्य में भी क्या बनने वाले हैं यह भी याद रखो तो वर्तमान और भविष्य श्रेष्ठ होने के कारण खुशी रहेगी और खुशी में रहने से सदा आगे बढ़ते रहेंगे। वर्तमान और भविष्य की दुनिया श्रेष्ठ है तो श्रेष्ठ के आगे जो दुखदाई दुनिया है वह याद नहीं आयेगी। सदा अपने इस बेहद के परिवार को देख खुश होते रहो। कभी स्वप्न में भी सोचा होगा कि ऐस भाग्यवान परिवार मिलेगा। लेकिन अभी साकार में देख रहे हो। अनुभव कर रहे हो। ऐस परिवार जो एकमत परिवार हो, इतना बड़ा परिवार हो यह सारे कल्प में अभी ही है। सतयुग में भी छोटा परिवार होगा। तो बापदादा और परिवार को देख खुशी होती है ना। यह परिवार प्यारा लगता है? क्योंकि यहाँ स्वार्थ भाव नहीं है। जो ऐसे परिवार के बनते हैं वह भविष्य में भी एक दो के समीप आते हैं। सदा इस ईश्वरीय परिवार की विशेषताओं को देखते हुए आगे बढ़ते चलो।

कुमारियों से:- सभी कुमारियाँ अपने को विश्व कल्याणकारी समझ आगे बढ़ती रहती हो? यह स्मृति सदा समर्थ बनाती है। कुमारी जीवन समर्थ जीवन है। कुमारियाँ स्वयं समर्थ बन औरों को समर्थ बनाने वाली हैं। व्यर्थ को सदा के लिए विदाई देने वाली। कुमारी जीवन के भाग्य को स्मृति में रख आगे बढ़ते चलो। यह भी संगम में बड़ा भाग्य है जो कुमारी बनी, कुमारी अपने जीवन द्वारा ओरों की जीवन बनाने वाली, बाप के साथ रहने वाली। सदा स्वयं को शक्तिशाली अनुभव कर औरों को भी शक्तिशाली बनाने वाली। सदा श्रेष्ठ एक बाप दूसरा न कोई। ऐसे नशे में हर कदम आगे बढ़ाने वाली! तो ऐसी कुमारियाँ हो ना! अच्छा– ओम् शान्ति

प्रश्न:- किस विशेषता वा गुण से सर्वप्रिय बन सकते हो?

उत्तर:- न्यारे और प्यारे रहने का गुण वा निस्संकल्प रहने की जो विशेषता है इसी विशेषता से सर्व के प्रिय बन सकते, प्यारेपन से सबके दिल का प्यार स्वत: ही प्राप्त हो जाता है। इसी विशेषता से सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अच्छा–